

लोकतंत्र का स्तंभ.....

# लोकस्तंभ

मासिक  
पत्रिका

www.thelokstambh.com

₹150

# मिट्टी में, मिला दिया !

विशेष प्रतिवेदन  
यूपी में मिट्टी में मिलते  
माफिया !





## प्रधान संपादक की कलम से



**राणा वंशमणि**  
प्रधान संपादक

लोकस्तंभ हमेशा अपने पाठकों को भारतीय समाज से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर सटीक और निष्पक्ष समाचार और विश्लेषण प्रदान करने के लिए समर्पित है। अनुभवी पत्रकारों और लेखकों की हमारी टीम यह सुनिश्चित करने के लिए अथक रूप से काम करती है कि हमारे पाठक नवीनतम समाचारों और रुझानों के साथ-साथ हमारे समाज के सामने सबसे अधिक दबाव वाले मुद्दों पर अच्छी तरह से सूचित और अद्यतित हैं। हम अपनी पत्रिका में राजनीति, सामाजिक मुद्दों, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और कला सहित कई विषयों को शामिल करते हैं। हमारा मानना है कि अपने पाठकों को उनके आसपास की दुनिया के बारे में एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करना और उनके जीवन को प्रभावित करने वाले जटिल मुद्दों को समझने में उनकी मदद करना अति महत्वपूर्ण है।

लोकस्तंभ अपने पाठकों को निष्पक्ष समाचार और विश्लेषण उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारा मानना है कि मीडिया के लिए अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना और पूँजीपतियों से आने वाले दबावों का विरोध करना महत्वपूर्ण है। हम अपने पाठकों के लिए सूचना का एक विश्वसनीय स्रोत बनने का प्रयास करते हैं, और हम पत्रकारों के रूप में अपनी जिम्मेदारी को बहुत गंभीरता से लेते हैं। हमारा मानना है कि एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए एक स्वतंत्र प्रेस महत्वपूर्ण है, और हमें उस परंपरा का हिस्सा होने पर गर्व है। हम सत्ता में बैठे लोगों को जवाबदेह ठहराने और उन लोगों को आवाज देने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जिन्हें अक्सर हाशिए पर रखा जाता है या मुख्यधारा की मीडिया द्वारा नजरअंदाज किया जाता है। लोक स्तंभ की अनूठी विशेषताओं में से एक उन मुद्दों को कवर करने की हमारी प्रतिबद्धता है जिन्हें अक्सर मुख्यधारा की मीडिया द्वारा अनदेखा किया जाता है। हमारा मानना है कि उन लोगों को आवाज़ देना महत्वपूर्ण है जिन्हें अक्सर चुप करा दिया जाता है या अनदेखा कर दिया जाता है, और उन मुद्दों पर प्रकाश डालना चाहिए जिन पर व्यापक रूप से चर्चा नहीं की जाती है।

कुल मिलाकर, लोकस्तंभ किसी भी व्यक्ति के लिए सूचना और विश्लेषण का एक मूल्यवान स्रोत है, जो भारतीय समाज में नवीनतम समाचारों और रुझानों से अवगत रहने में रुचि रखता है। हम अपने पाठकों को उच्चतम गुणवत्ता वाली पत्रकारिता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, और उन्होंने हम पर जो भरोसा जताया है, उसे बनाए रखने के लिए हम कड़ी मेहनत करते रहेंगे।

धन्यवाद!

**राणा वंशमणि**





**रवि रंजन कुमार**  
**सह-संपादक**

## सह-संपादक की कलम से



प्रिय पाठकों, मुझे काफी हर्ष हो रहा है "लोकस्तंभ" के अप्रैल संस्करण को आपके सामने प्रस्तुत करते हुए। जैसा कि आप सभी जानते हैं, लोकस्तंभ हमेशा से लोकतंत्र के प्रहरी के तौर पर काम करता रहा है। समाचार के क्षेत्र में एक ऐसी निष्पक्ष और बुलंद आवाज कि आवश्यकता है, जो कि सिर्फ लोकतंत्र को मजबूत करें, ना कि सत्ता अथवा धनाढ़ी लोगों को। इस मासिक पत्रिका के माध्यम से हमने समाज के अनेक पहलुओं जैसे राजनीति, खेल, अंतरराष्ट्रीय मुद्दे, ऐतिहासिक, पर्यावरण, संस्कृति एवं कला इत्यादि पर चर्चा की है, जिसे पढ़कर आपको निश्चित है बहुत कुछ जानने को मिलेगा। इस संकरण में हमने स्वतंत्रता संग्राम की बारीकियों को सरल शब्दों में अपने अनुभवी लेखकों के द्वारा समझने की कोशिश की है। जिसे आज की युवा पीढ़ी को जानना अत्यंत आवश्यक है।

लोक स्तंभ हमेशा से ही छात्रों और युवा पीढ़ी की सोच को आकार देने का काम किया है, इसी के मध्यनजर हमने इस संस्करण में भविष्य की तकनीक जैसे प्यूल सेल, एवं हाइड्रोजन प्यूल और उससे जुड़े प्रभावों एवं संभावनाओं को विस्तृत एवं आसान शब्दों में समझने की कोशिश की है, इन सबके अलावा इस पत्रिका में हमने इस महीने घटित हुई प्रमुख घटनाओं का निष्पक्ष विश्लेषण किया है। आपसे आशा है कि आप हमारे इस प्रयास की सराहना अवश्य करेंगे।

मैं इस संस्करण में सहयोग देने वाले सभी लेखकों और संपादकों का हार्दिक अभिनंदन करना हूं, जिनकी वजह से हम इस मुकाम पे पहुंचे हैं। यदि आपका कोई सुझाव हो या आप हमसे जुड़ना चाहते हों, तो अवश्य संपर्क करें।

धन्यवाद!

**रवि रंजन कुमार**



# लोकस्तंभ

संरक्षकः

श्री सुनील कुमार



डॉ सुमित सरोहा  
सहायक प्राध्यापक  
(सलाहकार)



श्री उमानाथ सिंह  
वरिष्ठ पत्रकार  
(मार्गदर्शक)

## संपादक - मंडल



गौरव त्रिखा  
प्रबंध संपादक



सत्यम पांडे  
प्रबंध संपादक



केशव शर्मा  
प्रबंध संपादक



समृद्धि रत्न  
परामर्श संपादक



लक्ष बत्रा  
परामर्श संपादक



सृष्टि सिंह सोलंकी  
परामर्श संपादक



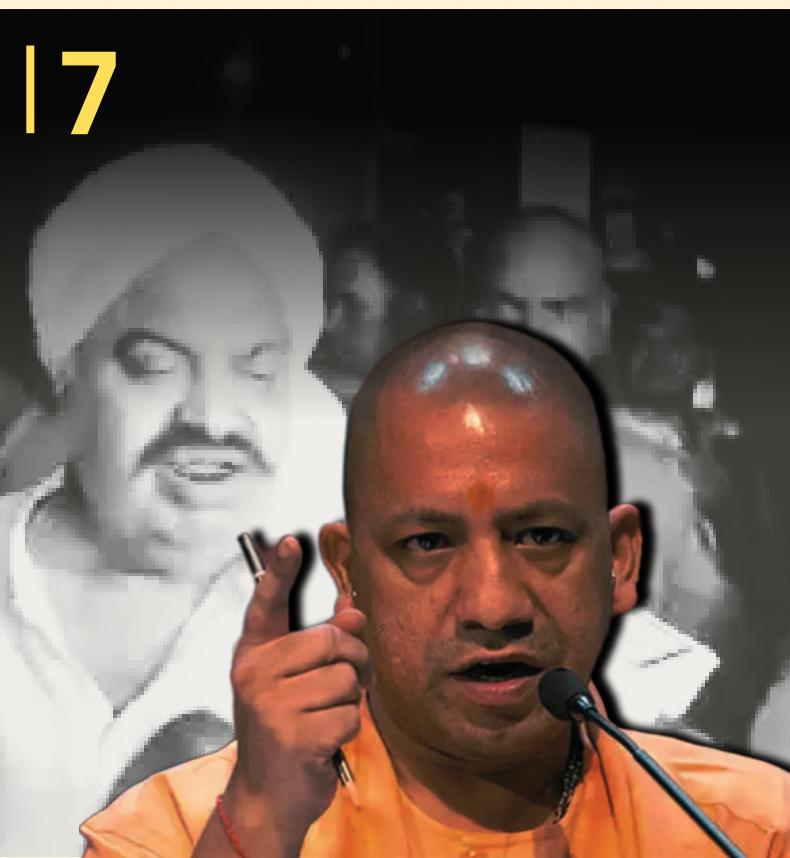
हर्ष पांडे  
कॉलमनिस्ट



कपिल नागल  
कॉलमनिस्ट

# अनुक्रमणिका

| 7



07

यूपी में मिट्टी में मिलते माफिया।

09

फिर से क्षत्रिय केंद्रित होगी बिहार की राजनीति!

11

राहुल गांधी की संसद से अयोग्यता, भारत और मोदी के लिए क्यों मायने रखती है।

13

स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों का योगदान।

15

रूस-यूक्रेन युद्ध : भारतीय अर्थव्यवस्था, घरेलू बाजारों पर प्रभाव।

17

फ्यूल सेल: बाजार की उम्मीदें, चुनौतियां और भविष्य।

19

टक्नोलाजी के युग में पुस्तकें भाषा और संस्कृति की संवाहक।

20

भारत: लोकतंत्र और उसके विरोधाभास।

| 11

संपादकीय



| 21



21

मिथिला पेंटिंग, भारत की एक अद्वृत धरोहर।

24

पहले स्वतंत्रता संग्राम के भीष्म पितामह

26

चीन से जनसंख्या में आगे निकला भारत।

28

फिर मोदी पर बरसे सत्यपाल मलिक!

30

**RRR** के सॉन्ग नाटु-नाटु ने ऑस्कर जीतकर रचा इतिहास।

31

'द एलिफेंट व्हिस्पर्स' ने जीता बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट फिल्म का अवॉर्ड।

32

IPL 2023: आधा सीजन खत्म, जानिए क्या रहा खास!

34

कृषि क्षेत्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका।

35

क्या लीगल हो जाएगा समलैंगिक विवाह?

36

तारेक फतेह: पाकिस्तान में जन्मा एक सच्चा भारतीय।

| 30





**मैं लोकस्तंभ का यह संस्करण पूज्य स्वर्गीय दादी  
विदुषी कमला सिंह के स्मृतियों को समर्पित करता  
हूँ।**

**राणा वंशमणि  
प्रधान संपादक**

# यूपी में मिट्टी में मिलते माफिया।



राणा वंशमणि  
प्रधान संपादक

अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ की पुलिस हिरासत में मेडिकल जांच के लिए अस्पताल जाते समय 15 अप्रैल शनिवार की रात को 3 लोगों ने गोली मारकर हत्या कर दी। हत्यारे मीडिया कर्मचारियों के भेष में अतीक के करीब पहुंचे और मौका मिलते ही 8 गोलियां उसके शरीर में उतार दी। अतीक और उसके भाई को मारने के बाद तीनों अपराधियों ने अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस वालों ने बताया कि तीनों संदिग्ध हमलावर मोटरसाइकिल पर घटनास्थल तक पहुंचे थे। इस घटना में एक पुलिसकर्मी और एक पत्रकार भी घायल हो गया। उत्तर प्रदेश में शांति कायम रखने के लिए राज्य के जिलों में बड़ी सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हत्याओं की न्यायिक जांच के आदेश दे दिए हैं।

## आइए जानते हैं एक कोयला चोर कैसे बना बाहुबली,

अतीक एक बहुत गरीब परिवार से आता था व उसके पिता घोड़ा गाड़ी चलाते थे। हाई स्कूल में फेल होने के बाद उसने स्कूल छोड़ दिया। गुजारा करने के लिए वह ट्रेनों से कोयला चुराने लगा और उसे बेचकर पैसा कमाने लगा। उसकी कुछ और पाने और बड़ा बनने की चाह ने उसे अपराध जगत में थोड़ा और अंदर धकेला। उसने जल्द ही ठेकेदारों को धमकाकर रेलवे के स्क्रैप कॉन्ट्रैक्ट हथियाने शुरू कर दिए। 1979 में 17 साल की उम्र में अतीक पर इलाहाबाद में पहला हत्या का आरोप लगा इसके बाद इलाहाबाद से ही अतीक ने अपना पूरा नेटवर्क चलाया। अतीक अहमद पर जबरन वसूली से लेकर अपहरण और हत्या तक की अपराधिक गतिविधियों के किससे पूरे उत्तर प्रदेश में मशहूर है। उनके इन्हीं गोरख धंधे ने उनके परिवार को गरीबी से बाहर निकाला और उत्तर प्रदेश के सबसे शक्तिशाली परिवारों में शामिल कर दिया। अतीक ने अपने क्राइम के शुरुआती दिनों में चांद बाबा जैसे खूंखार गैंगस्टर्स के साथ भी काम किया। 1989 आते आते शौकत इलाही का पुलिस एनकाउंटर होने के बाद

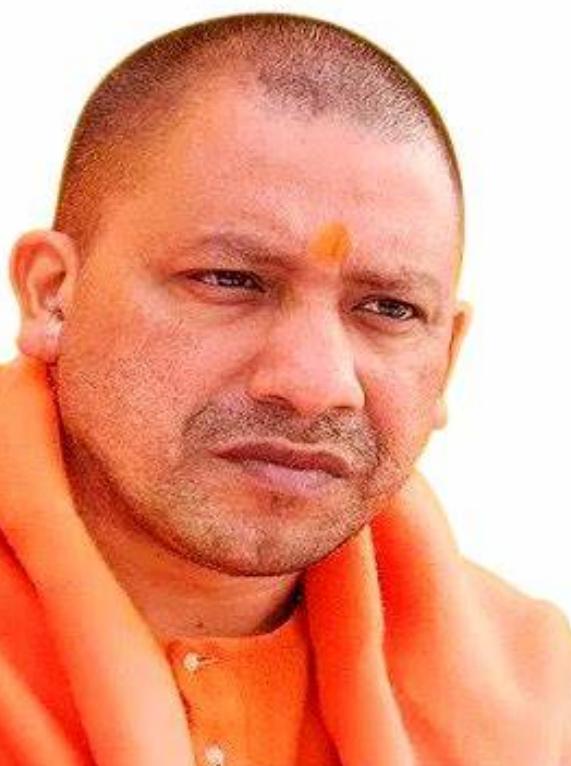
अतीक का मुकाबला करने वाला कोई नहीं बचा। अतीक पर 100 से अधिक अपराधिक मामले दर्ज हैं रिपोर्ट के अनुसार अतीक वह पहला शख्स है जिसके खिलाफ गैंगस्टर अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया था। 1989 में, 27 साल की उम्र में अतीक ने निर्विवाद बाहुबली का टैग हासिल किया।

## बाहुबली से राजनेता तक।

बाहुबली बनने के बाद उसी वर्ष उसने राजनीति में कदम रखा। उसने इलाहाबाद पश्चिम विधानसभा सीट से निर्दलीय चुनाव लड़कर जीत हासिल की। अतीक अहमद लगातार 5 बार इलाहाबाद पश्चिम निर्वाचन क्षेत्र से विधानसभा सदस्य के रूप में निर्वाचित हुआ। अतीक ने निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में दो बार 1991 और 1993 में अपनी सीट को बरकरार रखा। 1996 में उन्होंने उसी सीट पर सपा के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। 1998 में सपा से बाहर निकाले जाने पर 1999 में अपना दल में शामिल हो गया 1999 से 2003 तक वह अपना दल का अध्यक्ष रहा और अपना दल के उम्मीदवार के रूप में प्रतापगढ़ का चुनाव लड़ा लेकिन हार गया अतीक ने अपना दल के टिकट पर दोबारा 2002 के विधानसभा चुनाव में इलाहाबाद पश्चिम की सीट जीती और 2003 में दोबारा सपा से जुड़ गया।

अतीक अहमद 2004 में समाजवादी पार्टी के साथ थे जब उन्हें फूलपुर से सांसद चुना गया था। 2009 में अपना दल के उम्मीदवार के रूप में और 2014 लोकसभा चुनाव में श्रावस्ती से समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार के रूप में लोकसभा चुनाव लड़ा पर उन पर उसे हार का मुंह देखना पड़ा। वह 2018 के लोकसभा चुनाव में फूलपुर लौटा लेकिन निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में सीट नहीं जीत सका। लखनऊ गेस्ट हाउस मामले में अतीक अहमद का नाम सामने आया। जब 1995 में बसपा ने सपा से समर्थन छीन कर बीजेपी के साथ गठबंधन की सरकार बनाई, तो गुस्साए विधायकों ने गेस्ट हाउस का घेराव किया जहां बसपा प्रमुख और तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती ठहरी हुई थी। गेस्ट हाउस मामले का एक आरोपी अतीक अहमद भी था। 2012 के यूपी विधानसभा चुनाव के दौरान उसने जेल से ही नामांकन पत्र दाखिल किया और चुनाव के लिए जमानत के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय मे अर्जी डाली। उस समय 10 जजों ने उसकी जमानत अर्जी की सुनवाई से मना कर दिया या 11 जज मामले की सुनवाई के लिए तैयार हुआ और उसे जमानत मिल गई पर वह राजू पाल की पत्नी पूजा पाल से चुनाव हार गया।

उसने अपना आखिरी चुनाव 2019 में निर्दलीय रहते हुए वाराणसी से लड़ा जिसमें वह नरेंद्र मोदी के खिलाफ खड़ा था।



योगी आदित्यनाथ



अतीक अहमद

### पतन

अतीक अहमद को पहला झटका 2005 में राजू पाल केस में लगा राजू पाल बसपा से इलाहाबाद पश्चिम विधानसभा क्षेत्र से जीते और अतीक अहमद के छोटे भाई खालिद अजीम को हराया। अतीक राजू पाल हत्याकांड में गिरफ्तार कर लिया गया। अतीक बेल पर 2008 में बाहर आ गया। 3 साल जेल में रहते हुए भी उसने जेल से ही माफिया के धंधे को चलाया। अतीक अहमद को अगला झटका 2017 में लगा जब अखिलेश यादव ने सपा की कमान संभाली। उसी साल उसे सैम हिंगनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के साथ मारपीट करने के आरोप में पुलिस ने गिरफ्तार किया था।

उससे भी बुरा समय अतीक के लिए तब शुरू हुआ जब योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने और माफिया को जड़ से खत्म करने की बात की। उमेश पाल हत्याकांड वह आखरी झटका था जो अतीक अहमद के साम्राज्य के लिए नासूर बन गया और पुलिस के शिकंजे को उसके गले तक ले आया। उमेश पाल की हत्या में अतीक के साथ उसके बेटे और उसकी पत्नी का नाम भी सामने आया। अतीक का बेटा असद 13 अप्रैल को झांसी में पुलिस एनकाउंटर में मारा गया।

प्रयागराज में गोली मारे जाने से पहले जब अतीक से उसके बेटे के अंतिम संस्कार के बारे में सवाल किया गया तो उसने कहा “नहीं ले गए तो नहीं गए” यही शब्द उसके आखिरी शब्द थे।



अतीक अहमद और उसका पुत्र असद अहमद।



# फिर से क्षत्रिय केंद्रित होगी बिहार की राजनीति!



लव प्रताप सिंह  
कॉलमनिस्ट

बिहार सरकार द्वारा बिहार पुलिस जेल नियमावली, 2012 में संशोधन करने के दस दिन बाद, आजीवन कारावास से संबंधित एक खंड से कुछ शब्दों को हटाते हुए, राज्य सरकार के कानून विभाग ने सोमवार को पूर्व सांसद आनंद मोहन और 26 अन्य की रिहाई का मार्ग प्रशस्त करने का आदेश जारी किया। जिन्होंने हत्या और अन्य जघन्य अपराधों के सिलसिले में 14 साल की उम्रकैद की सजा पूरी कर ली है।

राज्य के कानून विभाग का आदेश राज्य की विभिन्न जेलों में बंद सभी 27 कैदियों की रिहाई के लिए स्टेट सेंटर्स रिमिशन काउंसिल पर आधारित था। हाल तक सहरसा जेल में बंद आनंद मोहन अपने परिवार की एक शादी में शामिल होने के लिए पैरोल पर आया हुए थे। 69 वर्षीय मोहन को 2007 में 1994 में गोपालगंज के जिला मजिस्ट्रेट जी कृष्णाया की हत्या के लिए दोषी ठहराया

गया था। उन्हें वैशाली में बाहुबली छोटन शुक्ला की हत्या के खिलाफ एक विरोध मार्च का नेतृत्व करने वाली भीड़ को उकसाने का दोषी ठहराया गया था। कृष्णाया विरोध मार्च के रास्ते को पार कर रहे थे और फिर अचानक भीड़ द्वारा उन पर हमला करके उन्हें पीट-पीटकर मार डाला गया। बिहार पुलिस जेल नियमावली, 2012 में संशोधन से पहले, 14 साल की सजा पूरी करने वाले दोषियों को उनके द्वारा किए गए अपराधों की गंभीर प्रकृति के कारण उम्रकैद की सजा पूरी करने वाला नहीं माना जाता था। इन दोषियों को आजीवन कारावास की सजा पाने के योग्य होने के लिए कम से कम 20 साल जेल में बिताने पड़े। बिहार के कानून विभाग के सचिव रमेश चंद्र मालवीय ने 24 अप्रैल को अपने आदेश में कहा:

"राज्य सरकार ने उन लोगों को मुक्त करने का फैसला किया है जिन्होंने सिफारिश पर अपनी सजा के 14 साल पूरे कर लिए हैं, राज्य की सजा छूट परिषद ने 20 अप्रैल को अपनी बैठक की।" हालांकि, कानून विभाग का आदेश इसके निर्णय के किसी अन्य विशिष्ट कारणों के बारे में विस्तार से नहीं बताता है। जबकि रिहा किए जा रहे 27 दोषियों में से कई को स्थानीय पुलिस के साथ अपनी नियमित उपस्थिति दर्ज करने के लिए कहा गया है, कानून विभाग के आदेश में आनंद मोहन के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं रखी गई है। इस साल 10 अप्रैल को, राज्य के गृह विभाग ने बिहार पुलिस जेल नियमावली के नियम संख्या 481 (1) (ए) में केवल पांच शब्दों को हटाकर



आनंद मोहन

संशोधन किया था। नियम 481(i)(ए) कहता है: “प्रत्येक सजायाप्ता कैदी, चाहे वह पुरुष हो या महिला, आजीवन कारावास की सजा काट रहा है और सीआरपीसी की धारा 433ए के प्रावधानों के अंतर्गत आता है, केवल 20 साल की सजा काटने के बाद समय से पहले रिहाई के लिए विचार करने का पात्र होगा। बलात्कार के साथ हत्या, डकैती के साथ हत्या, नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम 1955 के तहत हत्या, दहेज के लिए हत्या, 14 साल से कम उम्र के बच्चे की हत्या जैसे जघन्य मामलों में हत्या के लिए आजीवन कारावास की सजा पाए अपराधी उम्र, कई हत्याएं, जेल के अंदर सजा के बाद की गई हत्या, पैरोल के दौरान हत्या, एक आतंकवादी घटना में हत्या, तस्करी के ऑपरेशन में हत्या, झूटी पर एक लोक सेवक की हत्या।

जद (यू) एमएलसी और पूर्व मंत्री नीरज कुमार ने द लोकस्तंभ को बताया: “पहले, हम यह स्पष्ट कर दें कि यह आदेश किसी व्यक्ति को लाभ पहुंचाने के लिए नहीं है।”। गृह विभाग के एक अधिकारी ने द लोकस्तंभ को बताया: “कम से कम आधा दर्जन से अधिक लोग 75 वर्ष से अधिक आयु के हैं, उनमें से एक 93 वर्ष का है। निम्न आयु समूह की ओर से, 20 के दशक के मध्य से 50 के आयु वर्ग के अपराधी भी हैं। उन्हें मुक्त करने का विचार वृद्ध कैदियों की खराब स्वास्थ्य स्थितियों के कारण और युवा लोगों को दूसरा मौका देने के लिए भी था। सरकारी आदेश से लाभान्वित होने वाले



**बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार**

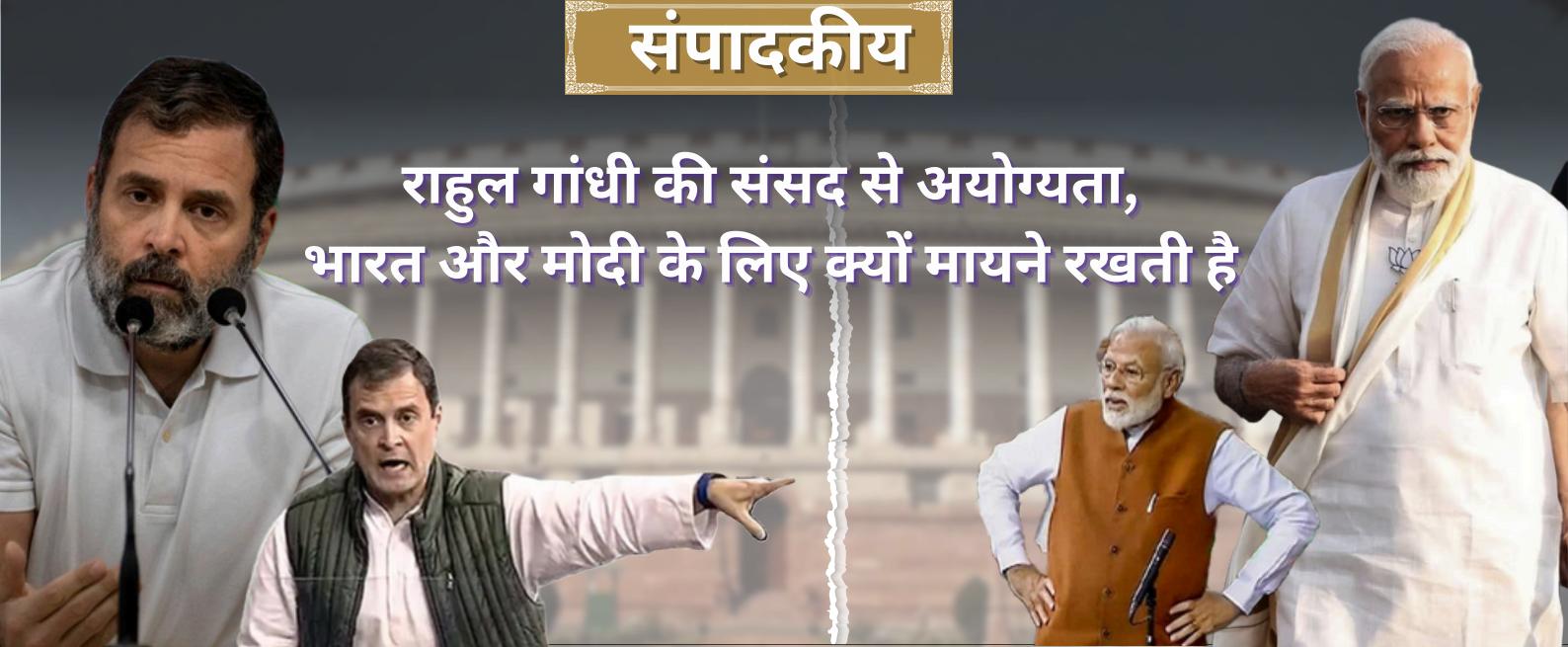
जघन्य अपराधों के अन्य दोषियों में दासगीर खान (75), पप्पू सिंह उर्फ राजीव रंजन सिंह (43), अशोक यादव (46), राजबल्लभ यादव उर्फ बिजली यादव (82), शिवजी यादव (420, किरथ यादव) शामिल हैं। 65), कलेक्टर पासवान (40), किशनदेव राय (65), सुरेंद्र शर्मा (68), देवनंदन नोनिया (49), रामप्रवेश सिंह (69), विजय सिंह (59), रामाधार राम (50), पतिराम राम (93) हृदयनारायण शर्मा (55), मनोज प्रसाद (67), पंचदंड पासवान (43), जितेंद्र सिंह (78), बिदेश्वरी यादव (83), खेलावन यादव (85), अलाउद्दीन अंसारी (42), मोहम्मद खुदबुद्दीन (36), सिकंदर महतो (44) और अवधेश मंडल (42) हैं।



**लवली आनंद**

महागठबंधन और भाजपा दोनों उच्च जाति के वोटों के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, आनंद मोहन, उनकी पत्नी लवली और उनके बेटे चेतन 2024 के लोकसभा और 2025 के विधानसभा चुनावों में, कोसी और आसपास के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जबकि उनके बेटे चेतन आनंद शिवहर से जद (यू) की सहयोगी राजपूत के विधायक हैं। जद (यू) में कई राजपूत नेता लंबे समय से आनंद मोहन की जल्द रिहाई के लिए महागठबंधन सरकार पर दबाव बना रहे थे। जद (यू) के सूत्रों के अनुसार, सिंह को जेल से बाहर लाने से जद (यू) और आरजेडी दोनों को एक 'शक्तिशाली क्षत्रिय' जाति को शांत करने में मदद मिलेगी और यहां तक कि राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा के खिलाफ सिंह के वकृत्व कौशल का भी उपयोग किया जा सकेगा। जेल जाने से पहले सिंह की छवि क्षत्रिय समाज के नेता के रूप में थी। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि 1930 के दशक में जाति जनगणना के अनुसार, बिहार में राजपूत 12 प्रतिशत थे, पार्टियों का उद्देश्य भाजपा से लड़ने के लिए सिंह के प्रभाव को भुनाना है। 2014 के बाद यह कदम और भी महत्वपूर्ण हो सकता है, अन्य उच्च जातियों की तरह, राजपूतों ने बड़े पैमाने पर भाजपा के प्रति अपनी वफादारी दिखाई है, और पिछले साल अगस्त में नीतीश के एनडीए छोड़ने के बाद भी ऐसा ही रहा है। अब बिहार में BJP को काफी मेहनत करनी होगी, अमित शाह को जाटों से ज्यादा बिहार के राजपूतों पे मशक्कत करनी होगी, क्योंकि बाबूसाहब को अब अपना नेता फिर मिल गया है।

## राहुल गांधी की संसद से अयोग्यता, भारत और मोदी के लिए क्यों मायने रखती है



### कौन हैं राहुल गांधी?

देश के सबसे प्रसिद्ध राजनीतिक राजवंश के वंशज 52 वर्षीय राजनेता ने अप्रैल 2024 के आसपास होने वाले आम चुनावों में खुद को मोदी और उनकी भारतीय जनता पार्टी के लिए एक चुनौती के रूप में पेश किया है। लेकिन पिछले दो आम चुनावों में भाजपा द्वारा उनकी पार्टी को हराने के बाद गांधी को मोटे तौर पर खारिज कर दिया गया था। कभी भारतीय राजनीति में एक अपराजेय शक्ति रही, गांधी की कांग्रेस पार्टी ने मतदाताओं से जुड़ने और भ्रष्टाचार के घोटालों और नेतृत्व के पलायन से कलंकित अपयश को दूर करने के लिए संघर्ष किया है। पार्टी ब्रांड को पुनर्जीवित करने के लिए, गांधी ने हाल ही में भारत के सबसे दक्षिणी सिरे से कश्मीर के बर्फीले उत्तर तक 2,170 मील की यात्रा पूरी की। सार्वजनिक संदेश में, उन्होंने खुद को एक मजबूत नेता के रूप में पेश किया है जो एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में भाजपा के हिंदू बहुसंख्यक विचारों का प्रतिकार कर सकता है।

ब्रिटेन की हालिया यात्रा के दौरान, गांधी ने यह कहकर मोदी की आलोचना की कि भारत में "लोकतंत्र पर हमला हो रहा है"। उन्होंने अरबपति गौतम अडानी के साथ मोदी के जुङाव पर भी सवाल उठाया, जो एक अमेरिकी शॉर्ट सेलर से धोखाधड़ी और बाजार में हेरफेर के आरोपों से जूझ रहे हैं। अडानी का समूह गलत काम से इनकार करता है।

### क्या था कोर्ट का फैसला?

गुरुवार को, पश्चिमी शहर सूरत की एक अदालत ने गांधी को मानहानि का दोषी ठहराया और उन्हें 2019 में कर्नाटक में एक चुनावी रैली में मोदी के उपनाम के बारे में आपत्तिजनक टिप्पणी करने के लिए दो साल की जेल की सजा सुनाई। मूल शिकायत भाजपा के सदस्यों द्वारा दर्ज कराई गई थी। हालांकि, अदालत ने गांधी को जमानत दे दी है और उन्हें उच्च न्यायालय में अपील करने की अनुमति देने के लिए 30 दिनों के लिए सजा को निलंबित कर दिया है।

भारत की मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, राहुल गांधी को संसद के सदस्य के रूप में अयोग्य घोषित कर दिया गया है, सुरत के एक स्थानीय अदालत ने उन्हें प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और मोदी समाज को बदनाम करने का दोषी ठहराया था। अगले साल होने वाले राष्ट्रीय चुनावों से पहले उनकी पार्टी के लिए एक बड़ा झटका था। भारत के संसद के निचले सदन ने कहा कि अयोग्यता 23 मार्च से प्रभावी थी, उसी दिन स्थानीय अदालत ने गांधी को मोदी नाम के बारे में अपमानजनक टिप्पणी करने का दोषी पाया। गांधी का निष्कासन भारत में उनके राजनीतिक जीवन के लिए एक कठिन मोड़ है।



राहुल गांधी



[TO BE PUBLISHED IN THE GAZETTE OF INDIA EXTRAORDINARY PART-II  
SECTION 3 (ii) DATED THE 24<sup>TH</sup> MARCH, 2023]

**LOK SABHA SECRETARIAT**  
PARLIAMENT HOUSE  
NEW DELHI - 110 001

No. 21/4(3)/2023/TO (B)

Dated the 24<sup>th</sup> March, 2023  
Chaitra 3, 1945 (Saka)

**NOTIFICATION**

No. 21/4(3)/2023/TO(B) Consequent upon his conviction by the Court of Chief Judicial Magistrate, Surat in C.C./18712/2019, Shri Rahul Gandhi, Member of Lok Sabha representing the Wayanad Parliamentary Constituency of Kerala stands disqualified from the membership of Lok Sabha from the date of his conviction i.e. 23 March, 2023 in terms of the provisions of Article 102(1)(e) of the Constitution of India read with Section 8 of the Representation of the People Act, 1951.

UTPAL KUMAR SINGH  
SECRETARY GENERAL

No. 21/4(3)/2023/TO (B)

Dated the 24<sup>th</sup> March, 2023  
Chaitra 3, 1945 (Saka)

I. Copy forwarded to Shri Rahul Gandhi, Ex-MP.  
II. Copy forwarded to:  
1. President's Secretariat; Prime Minister's Secretariat; Rajya Sabha Secretariat; Election Commission of India; All Ministries/Departments of Government of India.  
2. The Chief Electoral Officer, Thiruvananthapuram, Kerala.  
3. Liaison Officer, Directorate of Estate, Parliament House Annex, New Delhi.  
4. Secretary, New Delhi Municipal Council, New Delhi.  
5. Liaison Officer (Telephones), Parliament House Annex, New Delhi.  
6. All Officers and Branches of Lok Sabha Secretariat.

P.S.  
24.3.2023  
(P. C. TRIPATHY)  
JOINT SECRETARY

भारत की मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, राहुल गांधी को संसद के सदस्य के रूप में अयोग्य घोषित कर दिया गया है, सुरत के एक स्थानीय अदालत ने उन्हें प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और मोदी समाज को बदनाम करने का दोषी ठहराया था। अगले साल होने वाले राष्ट्रीय चुनावों से पहले उनकी पार्टी के लिए एक बड़ा झटका था। भारत के संसद के निचले सदन ने कहा कि अयोग्यता 23 मार्च से प्रभावी थी, उसी दिन स्थानीय अदालत ने गांधी को मोदी नाम के बारे में अपमानजनक टिप्पणी करने का दोषी पाया। गांधी का निष्कासन भारत में उनके राजनीतिक जीवन के लिए एक कठिन मोड़ है।

**गांधी के लिए और क्या दांव पर लगा है?**  
गांधी को चुनाव लड़ने से भी रोका जा सकता है अगर कोई उच्च न्यायालय उनकी सजा पर रोक नहीं लगाता है या उनकी जेल की अवधि कम नहीं करता है। भारत के कानून दो साल या उससे अधिक की जेल की सजा पाए लोगों को उनकी सजा पूरी होने के बाद छह साल तक चुनावी प्रतियोगिताओं में भाग लेने की अनुमति नहीं देते हैं।

उसकी अयोग्यता को भी पलटा जा सकता है और सांसद के रूप में उसकी स्थिति को बहाल किया जा सकता है यदि उच्च न्यायालय दोषिसंदिक्षिको निलंबित करता है या सजा को कम करता है।

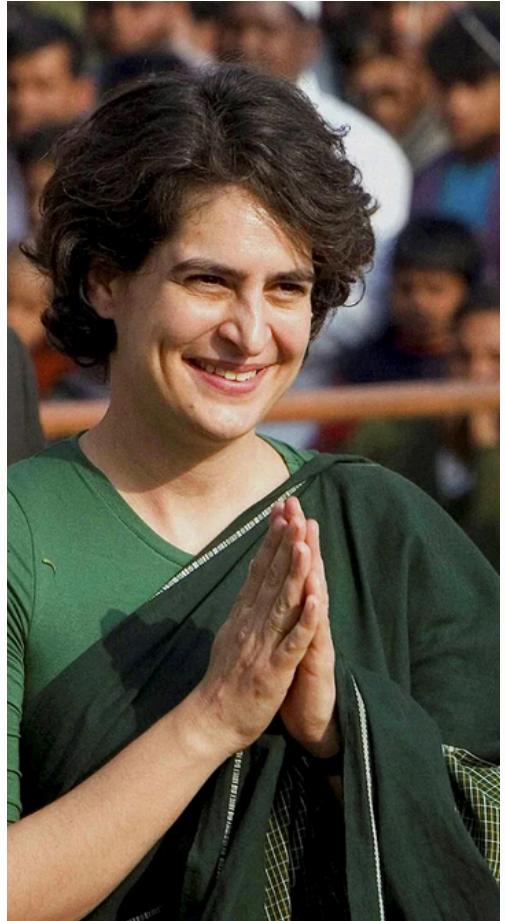
राहुल गांधी को सजा को खत्म करने के लिए एक कठिन कानूनी लड़ाई का सामना करना पड़ा, हालांकि उच्च न्यायालय आमतौर पर चुनाव अभियान के भाषणों से जुड़े मानहनि के मामलों में नरमी का विकल्प चुनते हैं।

**कांग्रेस पार्टी के लिए आगे क्या है?**

कांग्रेस पार्टी ने राहुल गांधी की अयोग्यता को "गलत और अस्थिर" कहा, और कहा

कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने कहा, "मेरे भाई ने जो कुछ भी कहा है, वह सच है। उन्होंने सरकार के खिलाफ बात की और यह उसी का परिणाम है।" उन्होंने कहा, "वह बहुत साहसी हैं। मैं उनके साथ हूं।"

शुक्रवार के घटनाक्रम से इस साल पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों से पहले भारत के विपक्ष और सत्तारूढ़ भाजपा के बीच संघर्ष बढ़ने की संभावना है। भाजपा ने कहा है कि कानून सभी पर समान रूप से लागू होता है और गांधी को परिणाम भुगतने चाहिए।



प्रियंका गांधी



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी



# स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों का योगदान।



डॉ. साहिल सैनी  
सहायक प्राध्यापक

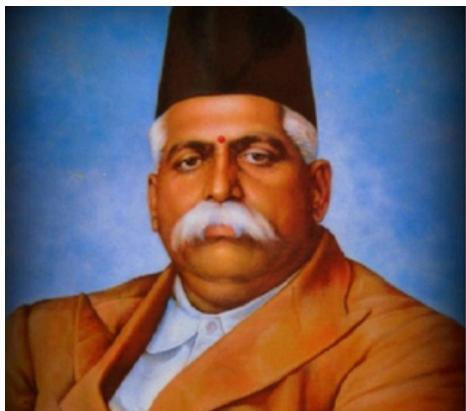
## स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों का योगदान

कहते हैं कि वर्तमान को समझने के लिए अतीत को समझना आवश्यक है। आजादी के 75 वर्ष बाद भी यह एक चर्चा का विषय है स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों की भूमिका कितनी अहम थी। ज्यादातर इतिहासकारों ने अहिंसात्मक आंदोलन पर अपना ध्यान 'केंद्रित' किया है तथा स्कूल कालेज का पाठ्यक्रम भी इसी पर जोर देता है। ऐसे में आम धारणा यह बन गई है कि 1857 के संग्राम के बाद भारतीयों ने अधिकतर सशस्त्र विद्रोह का रास्ता छोड़ अहिंसावादी आंदोलन का रास्ता अपनाया। क्रांतिकारियों की हिंसक गतिविधियाँ इसमें एक अपवाद की तरह प्रतीत होती हैं। उनके साहसिक कार्य संगठित और योजनात्मक प्रतीत नहीं होते।

हालांकि कई क्रांतिकारियों पर नृतांत भी लिखे गए हैं तथा फिल्में भी बनी हैं, परन्तु उनकी कार्य-प्रणाली व रणनीति पर अधिक शोध नहीं हुआ है जो एक दो कांतिकारी पर फोकस न करके पूरे क्रांतिकारी नेटवर्क का एक संपूर्ण चित्र प्रस्तुत कर सके। ऐसे में समाज उनके बलिदान का सम्मान तो हर वर्ष करता है, परन्तु, स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका का सही आंकलन करने में असमर्थ है। इस परिस्थिति में हाल ही में श्री संजिव सान्याल द्वारा प्रकाशित पुस्तक "Revolutionaries: the other story of how India won its freedom" 2+ अहम कमी को पूरा करती है।

**पुस्तक में दर्शाए गए कुछ मुख्य पहलू:**  
पुस्तक में शोध द्वारा यह दर्शाया गया है कि 20वीं सदी के प्रारंभ में बंगाल, पंजाब व महाराष्ट्र में उभरे क्रांतिकारी संगठन न सिर्फ एक दूसरे से जुड़े हुए थे, बल्कि मिलकर योजनाएँ बनाते थे, एक दूसरे से हथियार व तौर-तरीके सांझा करते थे। क्रांतिकारी संगठनों के बड़े नेता, जैसे अरविंद घोष, सचिन सान्याल इत्यादि न सिर्फ कांग्रेस के अधिकांश नेताओं के संपर्क में थे, बल्कि कांग्रेस के कई अधिवेशनों में भी अहम भूमिका निभाते थे। अर्थात वे स्वतंत्रता संग्राम की मुख्य धारा का हिस्सा रहे। इसके अलावा क्रांतिकारियों ने जापान, युरोप, लंदन, नॉर्थ अमेरिका व अन्य देशों में भी अपना नेटवर्क स्थापित किया ताकि वे अन्य देशों की सरकारों, मीडिया व लोगों का समर्थन ले सकें तथा वहाँ के क्रांतिकारी संगठनों से संपर्क में रह सकें।

क्रांतिकारी संगठन भारत में मध्यकाल से प्रचलित आखाड़ों के नेटवर्क पर आधारित था। उन्होंने अखाड़ों को अपना गढ़ बनाया जहाँ उन्हें आसानी से देशप्रेम व क्रांतिकारी प्रवृत्ति के युवा मिल जाते थे। इस पुराने रणनीति से जल्द ही एक बड़े व उत्साहित संगठन को खड़ा करने में सफलता प्राप्त हुई। प्रथम विश्व युद्ध के बाद क्रांतिकारियों की पहली पीढ़ी था जो या तो शहीद हो चुकी थी या काला पानी में लंबा व कठोर कारावास काट रही थी। इसके बावजूद वे फिर से एक नई पीढ़ी का क्रांतिकारी संगठन खड़ा करने में सफल रहे। सबसे महत्वपूर्ण पहलू जो सामने आता है वह यह है कि क्रांतिकारी एक सोची-समझी विस्तृत योजना के तहत काम कर रहे थे। वे 1857 के सशस्त्र संग्राम से प्रेरित थे। उनकी दीर्घकालिक योजना 1857 की ही तरह ब्रिटिश सेना में शामिल भारतीय सैनिकों में विद्रोह जगाने की थी। बड़े पैमाने पर यह विद्रोह जगाकर भारत को आजाद करवाना उनका लक्ष्य था। अंग्रेज भी इसकी गंभीरता को समझते थे। प्रथम व द्वीतीय विश्व युद्धों में बड़े पैमाने पर भारतीय सैनिकों ने ब्रिटेन के लिए युद्ध लड़े व अपना बलिदान दिया। इन युरोपिय युद्धों में अनुभव पा कर लौटे भारतीय सैनिक किसी भी युरोपिय सेना से कम न थे। इस बार अगर भारतीय सैनिक बड़े पैमाने पर विद्रोह कर देते तो शायद अंग्रेज उन्हें 1857 की तरह नियंत्रित नहीं कर पाते। इसलिए अंग्रेज क्रांतिकारियों की गतिविधियों की गंभीरता से जासूसी करवाया करते थे व पकड़े गए क्रांतिकारियों को सख्त से सख्त सजाएँ दी जाती थी।



**डॉ केशव राव बलिराम हेडेगेवार**

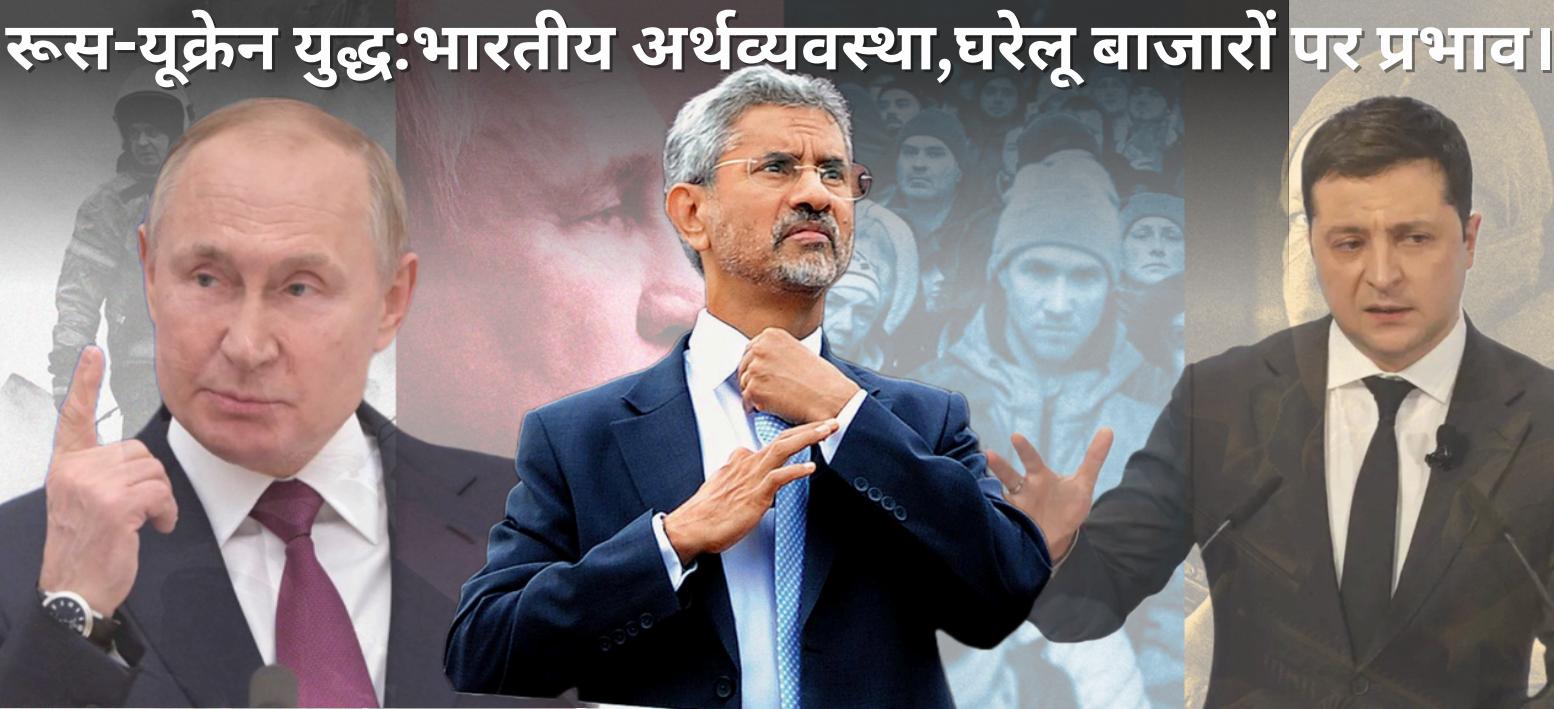
क्रांतिकारी जानते थे कि इस विद्रोह को बड़े पैमाने पर व एक साथ जगाने के लिए एक सही मौके का होना आवश्यक था। इस बीच उनकी अधिकांश गतिविधियाँ हथियार जुटाने पर केंद्रित थीं। वे क्रांतिकारी तथा आतंकवादी का अंतर भली-भांति समझते थे व कई शीर्ष क्रांतिकारियों ने इस पर अपने विचार भी दिए हैं। इस योजना को क्रियान्वित करने का पहला प्रयास प्रथम विश्व युद्ध में किया गया जब अंग्रेजी सरकार युरोप में युद्ध में वयस्त भी। परन्तु मुख्य व कुछ गदारों की सहायता से अंग्रेजों को पहले ही सूचना मिल गई तथा वे इसे विफल कर पाए। परन्तु अंततः क्रांतिकारी अपने प्लान में द्वीतिय विश्व युद्ध में सफल हुए। बंगाल की अनुशीलन समीति के अहम सदस्य राश बिहारी बोस ने मे जापान की मदद से, 1942 द्वीतिय विश्व युद्ध में ब्रिटेन की तरफ से लड़ रहे व जापान के कब्जे में आए लगभग 12,000 भारतीय सैनिकों को लेकर 'आज़ाद हिंद फौज का गठन किया, जिसका बाद में नेताजी सुभाष चन्द्र ने नेतृत्व किया व 'दिल्ली चलो' का नारा दिया। यह सभी भारतीय सैनिकों को संकेत था कि वे विद्रोह कर आज़ाद हिंद फौज में शामिल हों। हालांकि आज़ाद हिंद फौज युद्ध में तो नहीं जीत सकी, क्योंकि ज्यादातर भारतीय सैनिकों तक यह बात पहुंच न सकी। परन्तु द्वीतिय विश्व युद्ध खत्म होने पर दिल्ली के लाल किले में शीर्ष नेताओं की सार्वजनिक परीक्षण कर के अंग्रेजों ने बहुत बड़ी गलती करी। INA के इस पब्लिक ट्रायल की मीडिया कवरेज से देश के सभी भागों में ये खबर फैल गई जिसने बड़े पैमाने पर नेवल म्यूटिंग को जन्म दिया जो आग की तरह पूरी नौसेना में तथा अन्य सेनाओं में फैल रही थी। 1946 की घटना के कुछ समय बाद ही ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत को स्वतंत्रता देने की घोषणा की गई थी। यहाँ तक की स्वतंत्रता पश्चात भारत दौरे पर आए ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लेमेंट एटली ने कहा कि ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत की स्वतंत्रता की घोषणा करने में नेवल म्यूटिंग



**विनायक दामोदर सावरकर**

एक अहम कारण रहा। क्रांतिकारियों की इस विस्तृत योजना व इसके इतिहास को जाने बगैर उनके योगदान का सही अंकलन करना संभव नहीं है। आज के परिवेश में इस पुस्तक का महत्व समसामयिक राजनीति व सामाजिक मुख्य धाराओं का जन्म स्वतंत्रता संग्राम में ही हुआ था। कांग्रेस और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दोनों ही स्वतंत्रता संग्राम से निकले। जहाँ कांग्रेस अहिंसात्मक आंदोलन से निकली तथा कई दशकों तक देश की सत्ता पर रही, क्रांतिकारी संगठनों से निकली राजनीतिक पार्टियाँ अधिक समय तक चल न सकीं। परन्तु क्रांतिकारियों द्वारा टी स्थापित (ess) आज भी प्रासांगिक है और आज की सत्ता की विचारधारा को प्रभावित भी करता है। डा. हेडेगेवार अनुशीलन समीति के सदस्य थे तथा उन्हें नागपुर में अनुशीलन की ब्रांच खोलने का भार मिला। इसी समय उन्होंने RSS की स्थापना भी की जिसकी संरचना अनुशीलन से प्रेरित थी। वहीं सावरकर, जिन्हें समीती के अखाड़ा - नेटवर्क से प्रेरित थी। वहीं आज के कुछ राजनैतिक दल अक्सर अपमानित करते हैं, क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत रहे तथा एक प्रमुख क्रांतिकारी दल के संस्थापक भी थे। अपने अतुल्य बलिदान के साथ वे एक विचारधारा हिंदुत्व, जो आज के परिवेश में काफी प्रासांगिक है। इन मुद्दों को गहराई से समझने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़ें। वर्तमान के भारत की कई चुनौतियों ने भी स्वतंत्रता संग्राम में ही जन्म लिया। उदाहरण के तौर खालिस्तानी अलगाववाद की समस्या। अमेरिका, कनाडा तथा ब्रिटेन के गुरुद्वारों में अंग्रेजों ने अपने मुख्यबिरों के द्वारा घुसपैठ इसलिए शुरू की थी क्योंकि इन देशों के सिख क्रांतिकारी संगठन 'गदर पार्टी' में बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे थे तथा भारत को आज़ाद करवाने के लिए कदम उठा रहे थे। अखाड़ा- नेटवर्क की ही तरह इन सिखों ने गुरुद्वारों को अपना मद बनाया। परन्तु अंग्रेज अंततः इन गुरुद्वारों में घुसपैठ

कर हिंदू व सिख में दरार पैदा करने में सफल रहे। इसिलिए आज हम देखते हैं कि खालिस्तान की मांग सबसे अधिक नॉर्थ अमेरिका व ब्रिटेन में स्थित कुछ सिख दलों से आती है। एक और आँख खोलने वाली बात इस पुस्तक में सामने आती है। जो लोग अंग्रेजों के मुख्यबिर थे तथा गदारी करके अंग्रेजों की सहायता करते थे, अंग्रेजों ने उन्हें अत्याधिक पद, सम्मान, जागीरें तथा कांट्रैक्ट्स् दिए, जिससे वे 1947 तक आते-आते प्रशासन में तथा प्रशासन के बाहर काफी प्रभावशाली हो चुके थे। दुखद बात यह है कि स्वतंत्रता मिलने पर इन्हें ढूँढ़कर इनको सजाएँ देने की बजाए, इन्हें ऐसे ही प्रशासन में तथा बाहर जारी रखा गया। उदाहरण के तौर पर, एल्फेड पार्क में चंद्र शेखर आज़ाद का पता पुलिस को देने वाले एक संदिग्ध मुख्यबिर, बाद में खुद को क्रांतिकारी बताकर हिन्दी के बहुत बड़े लेखक बने व साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किए गए। या कुंज बिहारी थापड़, जो अंग्रेजी सरकार के कांट्रैक्टर थे, जिन्होंने जलियाँवाला बाग कांड के दोषी रेजिनाल्ड डायर के सहायता कोष में एक लाख से अधिक का योगदान किया। इनके वंशज आज़ादी के बाद से लेकर आज तक भारत की केंद्रिय सत्ता के समीप रहे और सत्ता व मीडिया इलीट का हिस्सा रहे, या अमृतसर में गुरुद्वारा हरिमंदिर साहिब के उस समय के प्रबंधक, अदर सिंह, जिन्होंने जलियाँवाला बाग कांड के कुछ ही महीनों बाद डायर को हरिमंदिर साहिब में बुलाकर सरोपा देकर सम्मानित किया व उन्हें मानद सिख घोषित किया। जबकि हरिमंदिर साहिब जलियाँवाला बाग के बिल्कुल बगल में है तथा जलियाँवाला बाग कांड में मरे बहुत से लोग मंदिर आए श्रद्धालु ही थे। वही अहर सिंह हैं जिन्होंने 1905 में हरिमंदिर साहिब से हिन्दू देवी- देवताओं की मूर्तियाँ हटवाई। इन्हीं के वंशज, सिमरनजीत सिंह मान, जो फिलहाल लोक सभा सदस्य तथा शिरोमणी अकाली दल (अमृतसर) के प्रेसीडेंट भी हैं, और खुले तौर से खालिस्तान समर्थक भी हैं। ऐसी बहुत सी रोचक व आँख खोलने वाली जानकारीयों से परीपूर्ण यह पुस्तक शोध पर आधारित है। क्रांतिकारीयों की कहानियों, उनके तौर-तरीके, उनकी योजना, उनके साहस तथा बलिदान, उनसे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े कई रोचक पहलू व उनकी आज भी जीवित विरासत को जानने के लिए अभूतपूर्व शोध से परीपूर्ण इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें।



**डॉ सुमित सरोहा  
सहायक प्राध्यापक**

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की के नेतृत्व वाले यूक्रेन पर अपने पूर्ण पैमाने पर आक्रमण की शुरुआत की, इसे "विशेष सैन्य अभियान" कहा। पुतिन 200,000 सैनिकों को यूक्रेन में भेजा। एक साल बाद, दोनों देशों में लगभग 150,000 से अधिक लोग मारे गए हैं, कई बुनियादी ढांचे नष्ट हो गए हैं, युद्ध अभी भी उफान पर है, और न तो रूस पीछे हट रहा है और न ही यूक्रेन। लेकिन रूस-यूक्रेन संघर्ष ने भारत सहित वैश्विक अर्थव्यवस्था को कई झटके दिए हैं।

**भारत रूस-यूक्रेन युद्ध से कैसे निपटा?**  
बाजारों ने कैसी प्रतिक्रिया दी और वस्तुओं की बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने के लिए सरकार और केंद्रीय बैंक ने क्या कदम उठाए?

हम उन्हें एक-एक करके देखते हैं। रूस द्वारा यूक्रेन में अपने सैन्य अभियानों की घोषणा करने के बाद, बीएसई बैंचमार्क सेंसेक्स 2,700 अंक गिर गया, जबकि एनएसई निफ्टी 50 815 अंक गिर गया। 24 फरवरी, 2022 को सेंसेक्स में मार्च 2020 के बाद से सबसे खराब गिरावट देखी गई, जब कोविड महामारी फैली थी, जबकि, यह सूचकांक की अब तक की चौथी सबसे खराब गिरावट थी।

अगले कुछ महीनों में सेंसेक्स और निफ्टी में सुधार हुआ। लेकिन, जून में यूक्रेन युद्ध के बाद से बैंचमार्क सूचकांकों में सबसे खराब गिरावट देखी गई। पिछले साल 16 जून को सेंसेक्स और निफ्टी अपने 52-सप्ताह के निचले स्तर पर गिर गए थे, युद्ध पर बढ़ती चिंताओं और मुद्रास्फीति और अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव के कारण।

पिछले साल 16 जून को सेंसेक्स ने 51,360.42 के निचले स्तर को छुआ था, जबकि निफ्टी 15,293.50 तक गिर गया था। हालांकि, बाजारों ने पिछले एक साल में नई चोटियों को भी बढ़ाया है। 30 नवंबर को सेंसेक्स ने 63,000 का आंकड़ा पार किया और निफ्टी ने पहली बार 18,758 अंक का उल्लंघन किया। जबकि घरेलू बाजारों में पिछले महीने भारी बिकावाली देखी गई है, मुख्य रूप से अडानी समूह पर हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के कारण, सूचकांक 1.50 प्रतिशत से अधिक गिर गए। पुतिन ने पश्चिम को धमकी दी थी कि वह परमाणु परीक्षण फिर से शुरू करेंगे। 22 अप्रैल को सेंसेक्स 900 अंक से अधिक गिर गया, और निफ्टी 50 वैश्विक बाजारों के अनुरूप 272 अंक गिर गया, क्योंकि रूस ने लड़ाकू झूटी पर नई रणनीतिक प्रणालियों की घोषणा की।



**मोदी और पुतिन**



## भारत की मुद्रास्फीति और आरबीआई की दर में वृद्धि

रूस-यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को अपंग कर दिया है, जिससे वैश्विक खाद्य कमी शुरू हो गई है, और इसके परिणामस्वरूप देशों में उच्च मुद्रास्फीति दर हुई है।

भारतीय रिजर्व बैंक ने पिछले साल फरवरी में, यूक्रेन संघर्ष शुरू होने से पहले, वित्त वर्ष 2023 के लिए औसत मुद्रास्फीति 4.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था, क्योंकि कोविड-19 मामलों में कमी आ रही थी। हालांकि, भू-राजनीतिक तनावों ने देश की व्यापक आर्थिक स्थितियों को पलट दिया क्योंकि कच्चे तेल, धातु और भोजन की कीमतों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। भारत में, अप्रैल 2022 में मुद्रास्फीति 7.8 प्रतिशत के चरम पर पहुंच गई। मई-नवंबर 2022 की अवधि के दौरान औसत मुद्रास्फीति 6.8 प्रतिशत रही। आरबीआई के डिप्टी गवर्नर माइकल पात्रा के अनुसार, केंद्रीय बैंक के विश्लेषण से पता चला है कि "प्रारंभिक मुद्रास्फीति के झटके लगातार आपूर्ति के झटकों से दिए गए थे।" हालांकि, आरबीआई की रिपोर्ट में कहा गया है, "खर्च में बदले की वापसी और विशेष रूप से माल से संपर्क-गहन सेवाओं के लिए स्विंग" के बाद मूल्य दबाव कम हो गया। मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए केंद्रीय बैंक

ने पिछले मई से रेपो दर में 250 आधार अंकों की बढ़ोतरी की है। प्रमुख उधार दर वर्तमान में 6.50 प्रतिशत है।

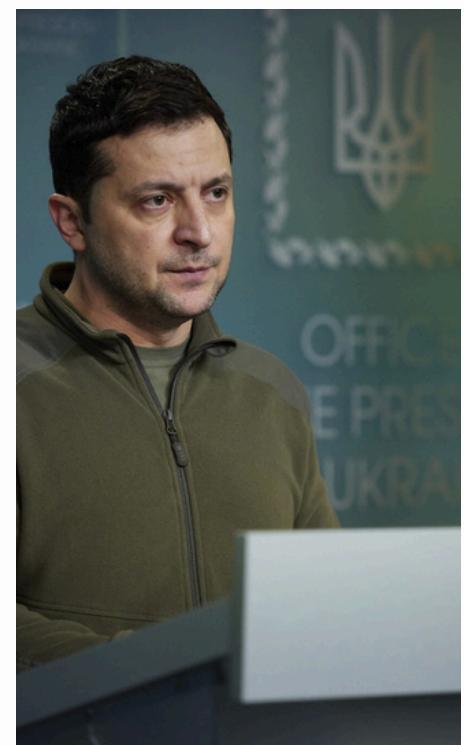
जबकि अर्थशास्त्रियों ने आरबीआई की फरवरी की बैठक के बाद अपनी दर वृद्धि को रोकने की उम्मीद की थी, जनवरी की सीपीआई मुद्रास्फीति आरबीआई के सहिष्णुता स्तर के बाहर तीन महीने के उच्च स्तर 6.52 प्रतिशत पर पहुंच गई। विश्लेषकों को अब अप्रैल में 25 आधार अंकों की और वृद्धि दिखाई दे रही है। यदि आरबीआई रेपो दर में फिर से वृद्धि करता है, तो प्रमुख उधार दर सात साल के उच्च स्तर पर पहुंच जाएगी।

जैसा कि कई देशों में मुद्रास्फीति लगातार बढ़ रही है, वित्तीय एजेंसियों ने भविष्यवाणी की है कि इस वर्ष वैश्विक आर्थिक विकास धीमा होने की उम्मीद है। लेकिन एजेंसियों को उम्मीद है कि भारत एक 'उज्ज्वल स्थान' में रहेगा। आईएमएफ ने कहा है कि डिजिटलीकरण, विवेकपूर्ण राजकोषीय नीति और इस साल बजट में घोषित पूँजी निवेश के लिए महत्वपूर्ण वित्तपोषण के कारण, वित्त वर्ष 2023 में भारत के 6.8 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है। एजेंसी के मुताबिक, इस साल प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में भारत की ग्रोथ सबसे तेज होगी।

## भारत का कच्चा आयात

रूस के यूक्रेन पर आक्रमण के परिणामस्वरूप मास्को पर पश्चिम द्वारा कई प्रतिबंध लगाए गए। मास्को से अपनी प्राकृतिक गैस की 40 प्रतिशत जरूरतों को पूरा करने वाले यूरोपीय संघ के देशों सहित पश्चिमी देशों ने रूस से अपनी खरीद को प्रतिबंधित कर दिया। तेल निर्यात से रूस के राजस्व को सीमित करने के लिए, G7 देशों ने दिसंबर में कच्चे उत्पादों पर 60 डॉलर प्रति बैरल की कीमत कैप लगा दी। पश्चिम के प्रतिबंधों के बीच, रूस एशियाई देशों को रियायती मूल्य पर कच्चा तेल बेच रहा है, और भारत उनमें से एक है। महंगे लॉजिस्टिक्स के कारण पहले रूसी तेल से परहेज करने वाले भारतीय रिफाइनर अब मास्को से रियायती कच्चे तेल की खरीदारी कर रहे हैं।

पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी) द्वारा जारी किए गए नवीनतम आंकड़ों से पता चलता है कि अप्रैल-दिसंबर 2022 में कच्चे तेल के आयात पर भारत की निर्भरता 87 प्रतिशत बढ़ गई। जबकि इस अवधि के दौरान इराक कच्चे तेल का भारत का शीर्ष आपूर्तिकर्ता था, रूस ने सऊदी अरब को पीछे छोड़ दिया। दूसरे सबसे बड़े आपूर्तिकर्ता के रूप में जनवरी में, रूस भारत के लिए शीर्ष कच्चे तेल का आपूर्तिकर्ता था, और मास्को से नई दिल्ली का कच्चा आयात मासिक आधार पर 9.2 प्रतिशत उछलकर रिकॉर्ड 1.4 मिलियन बैरल प्रति दिन (बीपीडी) हो गया।



यूक्रेन के प्रधानमंत्री व्लादमीर जेनलेंसी

# फ्यूल सेल बाजार की उम्मीदें, चुनौतियां और भविष्य।



रवि रंजन कुमार  
सह-संपादक

## फ्यूल सेल का परिचय

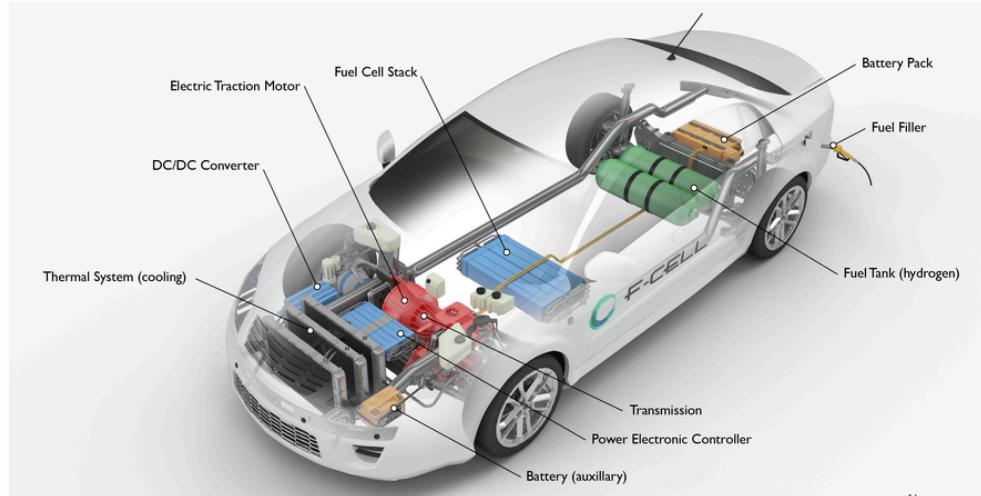
फ्यूल सेल एक विद्युत रासायनिक उपकरण है जो किसी भी मध्यवर्ती ऊर्जा रूपांतरण की आवश्यकता के बिना लगातार बिजली उत्पन्न करता है। हाइड्रोजन फ्यूल सेल बैटरी की तरह काम करते हैं, लेकिन उन्हें किसी भी रिचार्जिंग की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि अगर ईंधन के रूप में H<sub>2</sub> और O<sub>2</sub> की आपूर्ति होती है तो वे बिजली का उत्पादन करते हैं। एक फ्यूल सेल एक नकारात्मक इलेक्ट्रोड (एनोड) से बना होता है, और एक इलेक्ट्रोलाइट के चारों ओर एक सकारात्मक इलेक्ट्रोड (कैथोड) होता है। हाइड्रोजन एनोड को और हवा कैथोड को मुहैया कराया जाता है। हाइड्रोजन फ्यूल सेल में, एनोड पर एक उत्प्रेरक हाइड्रोजन अणुओं को प्रोटॉन और इलेक्ट्रॉनों में अलग करता है, इलेक्ट्रॉन एक बाहरी सर्किट से गुजरते हैं, जिससे बिजली का प्रवाह होता है। प्रोटॉन इलेक्ट्रोलाइट के माध्यम से कैथोड में जाते हैं, जहां वे पानी और गर्मी पैदा करने के लिए ऑक्सीजन और इलेक्ट्रॉनों के साथ जुड़ते हैं।

फ्यूल सेल प्रौद्योगिकी कोई नई तकनीक नहीं है क्योंकि यह पहले से ही अंतरिक्ष अनुप्रयोगों और ऊर्जा क्षेत्र में लंबे समय से उपयोग की जा रही है। हालाँकि, मोटर वाहन क्षेत्र में इस तकनीक को अपनाने में सुस्ती रही है। कार्बन तटस्थ होने के लिए ओईएम की आवश्यकताओं के कारण, इस तकनीक में प्रगति की जा रही है क्योंकि कई कंपनियों ने कनाडा, जापान और यूएस जैसे बाजारों में उत्पादन के लिए तैयार वाहन लॉन्च किए हैं। बाजार से उम्मीद है कि आईसीई वाहनों की तरह ईंधन भरने/रिचार्जिंग के लिए न्यूनतम या कोई प्रतीक्षा समय के साथ सुरक्षित, हरित, टिकाऊ और विश्वसनीय ऑटोमोबाइल हों। हालाँकि, मौजूदा तकनीक इन जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। चुनौतियों में पर्याप्त बुनियादी ढांचे (ईंधन भरने वाले स्टेशनों) की कमी शामिल है, जीवाश्म ईंधन से उत्पादित हाइड्रोजन जो हरित गतिशीलता की ओर बढ़ने के प्रयास को विफल कर देता है और नवीकरणीय संसाधनों के माध्यम से हरित हाइड्रोजन का उत्पादन करने के लिए भारी निवेश की आवश्यकता होगी।

इसके अलावा, वर्तमान में उत्पादित हाइड्रोजन की मात्रा कम है क्योंकि वर्तमान में इसका उत्पादन केवल औद्योगिक उद्देश्यों के लिए किया जा रहा है और ऑटोमोबाइल क्षेत्र की मांगों को पूरा करने के लिए उत्पादन बढ़ाने के लिए अतिरिक्त धन की आवश्यकता होगी।

## फ्यूल सेल मोबिलिटी में ओईएम और इंडस्ट्रीज की दिलचस्पी।

ऑटोमोटिव उद्योग को हरित गतिशीलता में स्थानांतरित करने के लिए कई व्यवधानों का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में, फ्यूल सेल ईवी उन फोकस क्षेत्रों में से एक बन गए हैं जहां ओईएम, टियर-1 और अन्य कंपनियों ने ईंधन सेल की चुनौतियों और सीमाओं को दूर करने और व्यावसायिक रूप से प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए अनुसंधान एवं विकास में निवेश किया है। लागत कम करने के लिए, ओईएम ने अपने संसाधनों को फ्यूल सेल (एफसी) स्टैक के लिए सस्ती सामग्री की खोज पर केंद्रित किया है। हाइड्रोजन उत्पादन, भंडारण और परिवहन के लिए बुनियादी ढांचा स्थापित करने पर भी ध्यान दिया जा रहा है।



afdc.energy.gov

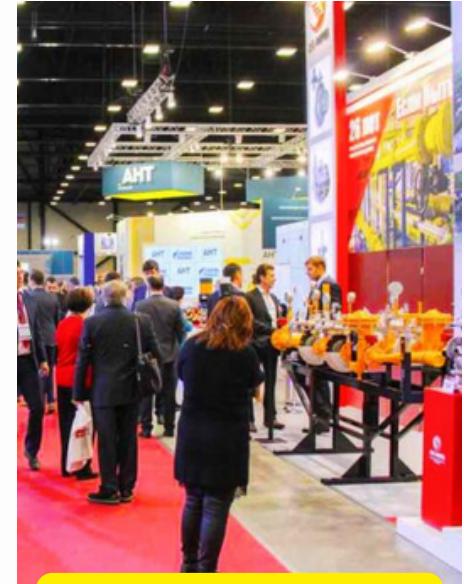
इसके अलावा, ओईएम एफसी कंपोनेंट्स मैन्युफैक्चरिंग, थर्मल मैनेजमेंट और एंसिलरी सिस्टम डिजाइन पर काम कर रहे हैं जो प्यूल सेल स्टैक के अनुकूल हो। यूएस और यूरोप में कई कंपनियां, मुख्य रूप से औद्योगिक बिजली उत्पादन कंपनियां हाइड्रोजन के वाणिज्यिक उत्पादन के लिए ओईएम/टियर-1 के साथ सहयोग कर रही हैं और उद्योग की मांगों को पूरा करने के लिए हरे और नीले हाइड्रोजन को निकालने के लिए सक्रिय रूप से इलेक्ट्रोलाइजर विकसित कर रही हैं।

### आगे का रास्ता - ईवीएस और हाइड्रोजन प्रौद्योगिकी

हाइड्रोजन प्रौद्योगिकी लंबी दूरी के परिवहन खंड के लिए अग्रणी है, विशेष रूप से वाणिज्यिक वाहन अनुप्रयोगों में। बैटरी की तुलना में प्यूल सेल हल्के और सघन होते हैं, जो मिनटों में ईधन भरने के विकल्प के साथ लंबी दूरी तय कर सकते हैं। अगले 5 वर्षों में प्यूल-सेल वाहनों के 60% तक बढ़ने की उम्मीद है। हालांकि, ऑटोमोटिव क्षेत्र की औपचारिकता और व्यवहार्यता धीमी गति से होगी। जैसे-जैसे ईधन-सेल तकनीक वाले अधिक से अधिक वाहन बाजार में पेश किए जा रहे हैं, वैसे-वैसे जल्द ही कुशल और हरित हाइड्रोजन उत्पादन, सस्ते ईधन सेल घटकों, उत्प्रेरक सामग्री और हाइड्रोजन रिफिलिंग स्टेशनों की स्थापना के साथ लागत में कमी पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। ओईएम और टीयर-1 को एफसी स्टैक सिस्टम के अनुरूप डिजाइन संशोधन/नए डिजाइन के साथ कंप्रेशर्स, सेंसर और पाइपिंग घटकों को विकसित करने के लिए भी मिलकर काम करना चाहिए। ऑटोमोबाइल में उनके आवेदन के साथ ईधन सेल का उपयोग पोर्टेबल ऊर्जा उत्पादन उपकरणों और स्थिर बिजली उत्पादन के लिए भी किया जाएगा।

ओईएम अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने के लिए वैकल्पिक ईधन खोजने के लिए अपनी खोज में एक कठिन लड़ाई लड़ रहे हैं। इस प्रकार, संबंधित देशों में सरकारी प्राधिकरणों द्वारा लगाए गए नियमों के अनुसार हरित पारिस्थितिकी तंत्र की ओर एक कदम है। इस संबंध में ईधन सेल वाहन एक उत्कृष्ट विकल्प हैं। वे बैटरी इलेक्ट्रिक वाहनों पर निर्भरता को कम करने में मदद करते हैं जो लिथियम, कोबाल्ट, मैग्नीज और अन्य सामग्रियों की कमी जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। बिना किसी उत्सर्जन के एक पारंपरिक वाहन के रूप में लगभग एक ही समय में ईधन भरने के विकल्प के साथ ईधन सेल पारंपरिक वाहनों के लिए सबसे अच्छा विकल्प होगा। प्यूल सेल का उपयोग पोर्टेबल ऊर्जा उत्पादन उपकरण के रूप में भी किया जा सकता है जिसे आवश्यक स्थान पर ले जाया जा सकता है और बिजली संयंत्र के रूप में उपयोग किया जा सकता है। यह जीवाश्म ईधन पर हमारी निर्भरता को कम करता है और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने में मदद करेगा और परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग को कम करेगा। हालांकि, प्यूल सेल गतिशीलता में यह परिवर्तन एक कीमत पर आता है। एफसी स्टैक में उपयोग किए जाने वाले घटक और सामग्री बहुत महंगे हैं, और वर्तमान में जीवाश्म ईधन से बहुत सीमित मात्रा में हाइड्रोजन का उत्पादन किया जा रहा है। इसलिए ओईएम, ऊर्जा कंपनियों और आपूर्तिकर्ताओं को एक साथ आने और प्यूल सेल स्टैक के लिए बेहतर सामग्री के अनुसंधान और विकास में निवेश करने की तत्काल आवश्यकता है। हाइड्रोजन के निष्कर्षण के लिए अधिक कुशल इलेक्ट्रोलिसिस विधियों को विकसित करने पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है जिसके

लिए बड़े पैमाने पर हाइड्रोजन संयंत्रों की स्थापना की आवश्यकता होगी। जैसे-जैसे अधिक से अधिक वाहन पेश किए जाते हैं, पर्याप्त बुनियादी ढांचे की आवश्यकता भी चिंता का विषय बन जाती है। निर्माताओं और सरकारी प्राधिकरणों दोनों को ग्राहकों की सुविधा के लिए पूरे देश में इन सुविधाओं को सहयोग करने और स्थापित करने की आवश्यकता है।



**Hydrogen Expo 2023**

हाल ही में हाइड्रोजन प्यूल और हाइड्रोजन प्यूल सेल की उपयोगिता को दुनिया के सामने लाने के लिए न्यू दिल्ली में ग्रीन एनर्जी एक्स्पो का आयोजन गया। जिसमें इस क्षेत्र से संबंधित कंपनियों ने भाग लिया और अपने तकनीकी विकास को लोगों के सामने प्रदर्शित किया। इसमें प्रमुख नाम है एफसी टेक एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड जोकि प्यूल सेल के क्षेत्र में काम करने वाली देश की अग्रणी कंपनी में से एक है। इसकी स्थापना भारतीय सेना के रिटायर्ड लेफ्टिनेंट कर्नल करणदीप सिंह ने 2016 में सेना की छोटी-छोटी जरूरतों को देखते हुए इस स्टार्टअप की शुरुआत की थी।

एफसी टेक एनर्जी के रिसर्च एंड डेवलपमेंट के मैनेजर रणवीर कुमार ने बताया कि भारत के जीरो कार्बन एमिशन के लक्ष्य को पूरा करने में प्यूल सेल बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, अगर इसके रिसर्च और डेवलपमेंट पर सरकार एवं प्राइवेट कंपनियां ध्यान दें। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में हम तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और प्यूल सेल की उपयोगिता को और बढ़ाने के लिए निरंतर काम करते रहेंगे। इसके अलावा और महत्वपूर्ण कंपनियां जैसे जेएसडब्ल्यू ग्रुप, वेलस्पन एनर्जी इत्यादि ने भी अपने तकनीकी विकास को प्रदर्शित किया।





# तकनीकी के युग में पुस्तकें भाषा और संस्कृति की संवाहक।



डॉ प्रज्ञा कौशिक  
मीडिया एजुकेटर

भाषा संभाषण, शब्द, समावेश और समरसता से अपना स्वरूप बनाती और संचार करती है। अपनी भाषा के प्रति सम्मान अपने गुरु, मां और पिता के प्रति सम्मान के समान है। हर भाषा और बोली की में एक अलग आकर्षण और मिठास है। इस वर्ष विश्व पुस्तक और कापीराइट्स दिवस याद कराता है पुस्तक का हमारे जीवन में महत्व और स्वदेशी भाषा कि संस्कृति और ज्ञान प्रसार में भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। भाषा विचारों का श्रंगार है, अलंकार है और लिखित रूप में यह संग्रहित धरोहर भी है। पुस्तक के रूप में भाषा ने संस्कृति, संतति और संसार को अक्षरशः संजोया है। पुस्तक के महत्व को कुछ इस तरह से समझा जा सकता है-

"गीता, कुरान, ग्रन्थ बाइबल भी इनमें बसते राम, रहीम, और गुरु, ईशु को भी हम इनसे ही सुनते हमारी तुम्हारी क़वायदों की साक्षी न बनती, गर 'आज ये किताबें न होती। किताबों में भाषा एक पल से सदियों तक का सफर तय करती है। विविध भाषा और बोली नए आयाम पुस्तक के माध्यम से निर्धारित करती हैं।

अगर मैं मेरी मातृभाषा हिन्दी की बात करूं तो इसकी उदारता, सार्थकता और सरलता, इसे विश्व भर में लोकप्रिय बनाती है। विश्व में तीसरे स्थान पर सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा हिन्दी आज सोशल मीडिया की भी प्रिय भाषा बनती जा रही है। पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो और टीवी से अलग सोशल मीडिया की संवाद और क्षमता इसे ज्यादा व्यक्तिगत, आकर्षक और सर्वप्रिय बनाती है। परम्परागत माध्यम एक एकतरफा संवाद है, जहाँ सुनने वाला केवल सुन सकता है। यह नया माध्यम अंतःविश्लेषणात्मक, अन्तःक्रियात्मक है जो आपसी संवाद को रोचक और तुरन्त प्रभावात्मक बनाता है। मोबाइल फोन के माध्यम से यह सर्वव्यापी, सर्वसमय, सर्वत्र और सर्वसुलभ हो गया है। हमारी सरकार ने देश की 22 अलग-अलग भाषा सिखाने के लिए नया मोबाइल ऐप बनाया है। इस ऐप की मदद से आम आदमी आसानी से भाषाओं का ज्ञान ले सकता है। ऐप का नाम है भाषा संगम। इस मोबाइल ऐप को सरकार कि महत्वाकांक्षी अभियान 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की पहल माना गया है। यह एक ऑनलाइन लैंग्वेज लर्निंग ऐप है

, जिसकी मदद से अलग-अलग भाषा सीखी जा सकती है और हमारी संस्कृति और सभ्यता को जाना जा सकता है। प्रत्येक भाषा के उपयोग ने संभाषण को जन जन के लिए सुलभ कर दिया है। वहाँ सोशल मीडिया के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति को भी एक थाह और अथाह पहुँच मिली है। स्वदेशी भाषा का सोशल मीडिया में उपयोग उपभोक्ताओं को अभिव्यक्ति की सरलता और सहजता प्रदान करता है।

आज मीडिया के सामने विषय विविध हैं भाषा, बोली विविध हैं, पाठकों और उपभोक्ताओं की रुचि और बौद्धिक क्षमता भी विविध और भिन्न हैं और मीडिया इन सबके मध्य सहज भाषा का सेतु बनाने की चुनौती का सामना कर रहा है। आज जो विषय वस्तु मीडिया प्रस्तुत कर रहा है उसमें भाषा और बोलियों में भाषा का सही अनुवाद और सार को प्रस्तुत करना भी एक अलग ही चुनौती है। अनुवाद के लिए दोनों भाषाओं की समझ और जानकारी चाहिए और यह न होने पर 'भ्रामक सूचना' और कापी राइट का उल्लंघन इसकी अगली चुनौती हैं। अनुवाद और अनुलेखन में दोनों भाषा की समझ किसी भी प्रकार की भांति नहीं होने देती। भाषा, बोली के मौखिक और लिखित रूप की सहज स्वीकार्य अभिव्यक्ति और उसकी सत्यता, विश्वसनीयता और वस्तुनिष्ठता पर निर्भर है। सावधानीपूर्वक, विवेचनात्मक सोच द्वारा सही सोच को पनपने दें। संस्कृति और सभ्यता को विभिन्न माध्यमों द्वारा समझें। शिक्षा के महत्व टैक्नोलॉजी के साथ साथ पुस्तक ज्ञान के महत्व को समझें और इन्हें जिन्दगी का हिस्सा बनायें।



# भारत: लोकतंत्र और उसके विरोधाभास।



**हिमांशु सरदाना**  
फ्रीलांस ट्रेनर, सदरलैंड ग्लोबल

भारत एक महत्वपूर्ण देश है जिसमें लोकतंत्र एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन इस देश में लोकतंत्र का विरोधाभास भी है। भारतीय इतिहास लम्बा है और विभिन्न आधार पर विभाजित होता है। भारत में लोकतंत्र का परदोष है कि यह समाजवादी तथा अनुभववादी आदर्शों के साथ एकीकृत नहीं होता है। भारत के इतिहास में, लोकतंत्र के अलावा अन्य भी तंत्र राज्यों ने शासन किया है। मौर्य वंश के समय में शासन का संचालन समाजवादी आदर्शों के आधार पर किया गया था। गुप्त वंश के समय में अनुभववादी आदर्शों के साथ शासन किया गया था। भारत के मध्यकालीन काल में मुस्लिम साम्राज्यों ने अधिकांशतः इस्लामी तंत्र के आधार पर शासन किया था। ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीयों ने लोकतंत्र के आदर्शों का अनुसरण किया। भारत की आजादी के बाद लोकतंत्र की स्थापना की गई और भारत एक संवैधानिक लोकतंत्र के रूप में विकसित हुआ। पहले चुनाव 1951-52 में हुए जहाँ 17 करोड़ से अधिक मतदाताओं ने मतदान किया। इसके बाद से

हर 5 साल में चुनाव होते हैं और भारतीय जनता चुनावी रूप से अपने प्रतिनिधियों को चुनती है। भारत में लोकतंत्र के परदोषों के बीच एक अन्य विरोधाभास भी हैं। एक बार चुनाव होने के बाद भी, राजनीतिक दलों के बीच स्थिरता और सहयोग की कमी रहती है। इसके अलावा, चुनावी घोषणाओं के बाद भी अक्सर सत्ताधारी दल लोगों की मांगों को पूरा नहीं करते हैं। देश में भीषण गरीबी, सामाजिक असमानता और जातिवाद जैसी समस्याओं के साथ-साथ, लोकतंत्र को भी कई बार चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। चुनावों में घपले, बैंक घोटाले और घूसखोरी जैसी भ्रष्टाचार की समस्याएं भी रही हैं। वर्तमान में भी भारत के लोकतंत्र में कई परदोष और चुनौतियां हैं। एक महत्वपूर्ण उदाहरण है भारत में जातिवाद की समस्या जो अभी भी उपस्थित है। जातिवाद के कारण अनेक लोग उच्च जाति और निम्न जाति के बीच समाज में समानता की कमी का सामना करते हैं। एक और चुनौती है भ्रष्टाचार जो लोकतंत्र के विकास को धीमा करता है। भारत में भ्रष्टाचार एक बड़ी समस्या है जो विभिन्न क्षेत्रों में देखी जा सकती है। इससे लोगों का विश्वास कम होता है और इससे सरकार के प्रति आस्था में कमी होती है। एक और मामला है भारत में संसद की विपरीत विवेकाधिकारी बैठकें। विपरीत विवेकाधिकारी बैठकें देश के लोगों के लिए नुकसानदायक होती हैं क्योंकि यह लोगों के हितों को ध्यान में रखकर नहीं की जाती हैं। स्वतंत्रता के बाद के पहले सत्रह वर्षों के लिए हमारे पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल लाल नेहरू को कांग्रेस की बैठक के दौरान सरदार वल्लभ भाई पटेल के सर्वसम्मति से चुने जाने के बावजूद बिना किसी चुनाव के चुना गया था। एक अकेली पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक गांधी

परिवार पर ध्यान केंद्रित करते हुए 50 वर्षों तक शासन किया और किसी ने भी तथाकथित लोकतंत्र की नींव या स्वयं के हितों के अनुरूप लोकतंत्र के स्वयंभू और ढाले हुए रूप पर सवाल उठाने की हिम्मत नहीं की। अपनी खुद की राजनीतिक सफलता के लिए आधार बनाने के लिए आपातकाल की आड़ में तथाकथित आइरन लेडी इंदिरा गांधी द्वारा मूल्यों और स्वतंत्रता की सभी आवाजों को कुचल दिया जाता है। मानव इतिहास में पहली बार हमने देखा है कि लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित एक सरकार ने 1984 के सिख दंगों के रूप में अपने नेता का बदला लेने के लिए अल्पसंख्यकों के खिलाफ सामूहिक हिंसा को उकसाया।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद, भारत लोकतंत्र के साथ आगे बढ़ता हुआ जा रहा है। आधुनिक तकनीकी विकास, शिक्षा के विस्तार और लोगों के विविध संसाधनों की उपलब्धता से भारत के लोगों की जीवन गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। भारत में महिलाओं की स्थिति में भी सकारात्मक बदलाव हुआ है। महिलाओं को शिक्षा दी जा रही है और उन्हें समानता के माध्यम से समाज में शामिल किया जा रहा है। महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं जिनके जरिए महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा रहा है। भारत में नए और व्यापक कानूनों के द्वारा भ्रष्टाचार कम किया जा रहा है और सरकार के लिए लोगों की जरूरतों को समझने की भी दृष्टि मजबूत हो रही है। लोगों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने और अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने के लिए नए स्कीमों और योजनाओं को शुरू किया जा रहा है।



# मिथिला पेंटिंग, भारत की एक अद्वृत धरोहर।

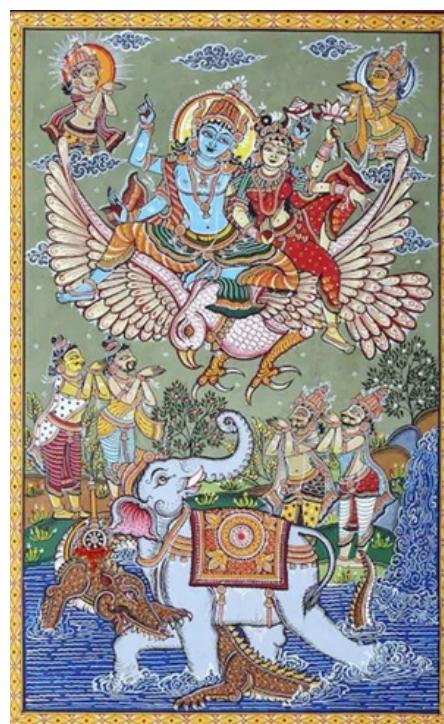


सृष्टि सिंह सोलंकी  
परामर्श संपादक

तभी से चली आ रही यह चित्रकारी आज पूरे विश्व में भारत को एक अलग पहचान देती है। घर की दीवारों से लेकर आज यह चित्रकारी कैनवास एवं कपड़ों तक का सफर तय किया है। मिथिला पेंटिंग के विश्व विख्यात होने का श्रेय ब्रिटिश ऑफिसर विलियम आर्चर को दिया जाता है, क्योंकि जब 1934 में वो मिथिला के गांव में गए और उन्होंने दीवारों पर सुंदर चित्रकलाओं को देखा और उसकी तस्वीरें भी ली, इसके बाद उन्होंने इस विषय में एक लेख भी लिखा जिसमें उन्होंने मिथिला पेंटिंग की खूबसूरती और समृद्ध विरासत की चर्चा की थी।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि भारत कला एवं संस्कृति की अद्वृत विरासत को अपने भीतर समाए हुए हैं, और इन विरासत में मिथिला पेंटिंग का एक विशेष स्थान है। मिथिला पेंटिंग भारतीय चित्रकला की एक विशेष शैली है, जोकि मिथिलांचल क्षेत्रों में काफी प्रसिद्ध है। यह चित्रकला नेपाल के क्षेत्रों में भी काफी प्रसिद्ध है।

ऐसा कहा जाता है कि इसकी शुरुआत रामायण काल में हुई थी, जब मिथिला में राजा जनक की पुत्री देवी सीता का विवाह श्रीराम से होने वाला था, तब राजा जनक के आदेश से मिथिला के नारियों के द्वारा घरों के दीवारों पर मिथिला पेंटिंग की चित्रकारी की गई थी, जो मिथिला के समृद्ध एवं सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती थी।



श्री कृष्ण की अद्वृत चित्रकारी

मिथिला पेंटिंग मुख्यता प्राकृतिक की सुंदरता, रामायण एवं श्री कृष्ण की लीलाओं पर आधारित होती है। इस चित्रकला की 5 शैलियां होती हैं- भरनी, कचनी, तांत्रिक, गोदना और कोहबर। इसमें बहुत से रंगों का प्रयोग होता है जिसमें चटक लाल, नीले एवं पीले आदि प्रमुख है। इस चित्रकला को बढ़ावा देने के लिए देशभर में बहुत से मेलों का आयोजन होता है जिसमें अनेक कलाकार अपनी कलाओं का प्रदर्शन करते हैं।

इसी सफर में हमारी भेंट एक ऐसे ही युवा कलाकार वैष्णवी चौधरी से हुई जो यूपी के बुलंदशहर की रहने वाली हैं, जिन्होंने काफी कम उम्र में ही इस कला में काफी माहरत हासिल कर लिया है।

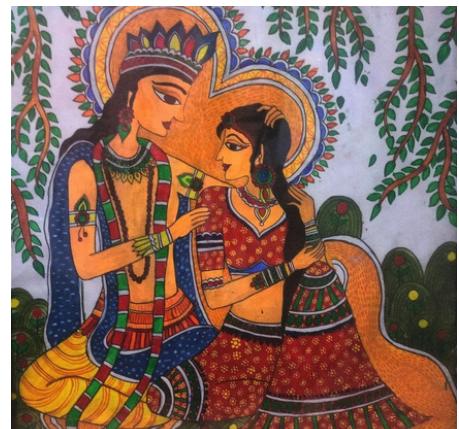
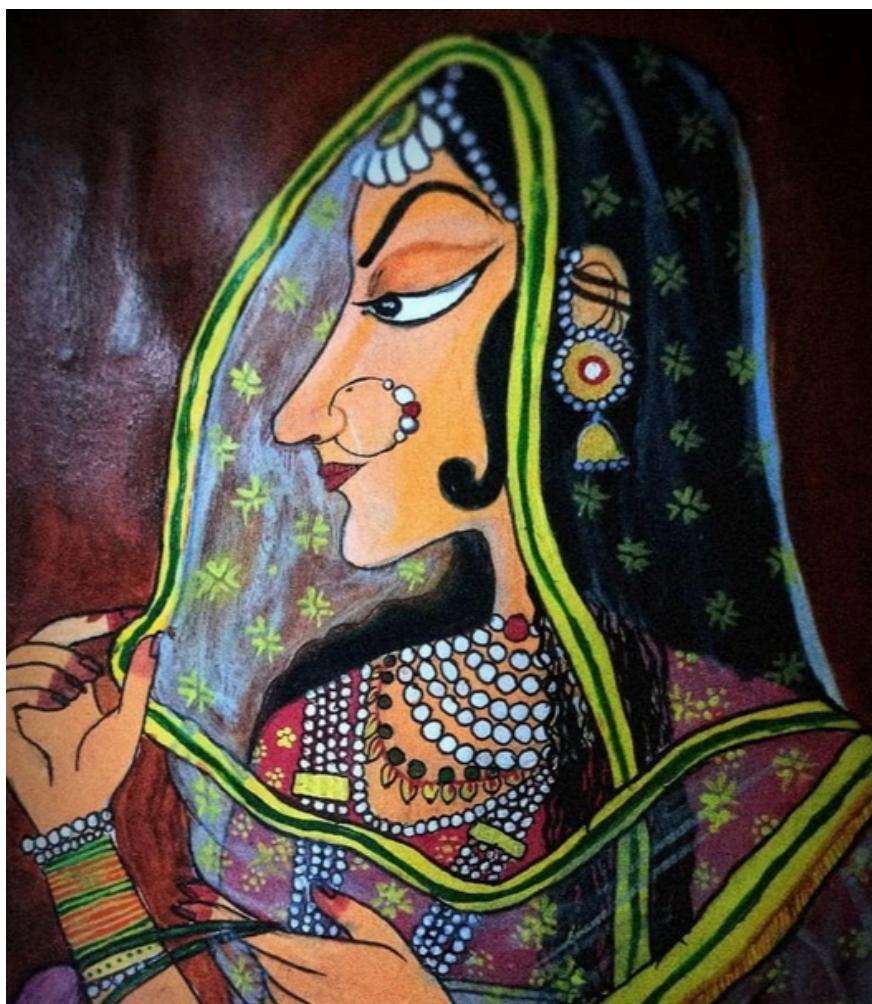


वैष्णवी चौधरी

उन्होंने लोकस्तंभ से खास बातचीत में बताया कि उन्होंने यह चित्रकारी किसी से सीखी नहीं है बल्कि बचपन से इस कला में रुचि होने के कारण चित्रकारी करती आ रही है, जिसमें उनकी मदद उनकी माता श्री करती हैं। इस लेख के माध्यम से हम उनके द्वारा बनाए गए मिथिला पेंटिंग की अद्भुत तस्वीरें साझा कर रहे हैं, जिससे ऐसे और भी युवा कलाकारों को प्रेरणा प्राप्त हो सके।



श्री कृष्ण की अद्भुत चित्रकारी



राधा-कृष्ण

मिथिला पेंटिंग की अद्भुत तस्वीरें घर के दीवारों की सुंदरता में चार चांद लगा देती है। इस चित्रकला के कलाकारों को हमें प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते रहना चाहिए क्योंकि ये कलाकार ही भारत की समृद्ध वैभव एवं विरासत को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करती है। यदि आप भी मिथिला पेंटिंग की विरासत एवं उनके कलाकारों को जग प्रसिद्ध करने के हमारे इस मुहिम में शामिल होना चाहते हैं एवं अपने घरों को प्राकृतिक एवं भारतीय संस्कृतिक चित्रकलाओं से सवारना चाहते हैं, तो आप हमसे संपर्क कर सकते हैं। हम आपके इच्छा अनुसार इस चित्रकला को आपके घर तक पहुंचाने में पूरी मदद करेंगे।



NIELIT

PMKVY



Skill India



## MR. BHARAT BHUSHAN DIRECTOR, I-CARE INSTITUTE HISAR

आज के डिजिटल युग में कंप्यूटर शिक्षा विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। भारत में राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (NIELIT) देश भर में छात्रों, पेशेवरों और नौकरी चाहने वालों को कंप्यूटर शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। नाइलिट के पाठ्यक्रम प्रोग्रामिंग, नेटवर्किंग, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर विकास सहित इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं को कवर करते हैं।

कंप्यूटर शिक्षा और नाइलिट पाठ्यक्रमों के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता है। आज की दुनिया में, कंप्यूटर हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है, और कुशल कंप्यूटर पेशेवरों की मांग पहले से कहीं अधिक है। व्यवसायों से लेकर सरकारी संगठनों और गैर-लाभकारी संगठनों तक, हर कोई कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी पर निर्भर करता है। इसलिए, छात्रों को नौकरी के लिए तैयार करने और उन्हें अपने करियर में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करने के लिए कंप्यूटर शिक्षा आवश्यक है। नाइलिट द्वारा प्रदान किए जाने वाले पाठ्यक्रमों को तेजी से बढ़ावा दिया जाएगा ताकि वे प्रौद्योगिकी परिदृश्य की मांगों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

वे छात्रों को नवीनतम सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर प्रौद्योगिकियों में अनुभव प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें नौकरी में प्रतिस्पर्धा में बढ़त मिलती है। शुरुआती से उन्नत शिक्षार्थियों तक, विभिन्न छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम भी तैयार किए गए हैं, और पाठ्यक्रम की अवधि और वितरण के तरीके के संदर्भ में लचीलापन प्रदान करते हैं। इसके अलावा, नाइलिट पाठ्यक्रम विभिन्न सरकारी संगठनों और निजी कंपनियों द्वारा मान्यता प्राप्त हैं, जो उन्हें नौकरी चाहने वालों के लिए एक मूल्यवान संपत्ति बनाते हैं। कई सरकारी नौकरियों के लिए कंप्यूटर प्रवीनता की आवश्यकता होती है, और नाइलिट से प्रमाणन प्राप्त करने से उम्मीदवार के लिए नौकरी हासिल करने की संभावना बढ़ जाती है। इसी तरह, निजी कंपनियां भी प्रासंगिक कंप्यूटर कौशल और प्रमाणपत्र वाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता देती हैं। नौकरी के अवसर प्रदान करने के अलावा, कंप्यूटर शिक्षा और नाइलिट पाठ्यक्रम भी छात्रों को विभिन्न छात्रों को विभिन्न सॉफ्ट कौशल विकसित करने में मदद कर सकते हैं, जैसे समस्या समाधान, महत्वपूर्ण सोच और संचार। ये कौशल न केवल कार्यस्थल बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी में भी मूल्यवान हैं। अंत में, कंप्यूटर शिक्षा और नाइलिट पाठ्यक्रम

आज की दुनिया में महत्वपूर्ण हैं। वे छात्रों को उनके करियर में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करते हैं और उन्हें नौकरी के बाजार के लिए तैयार करते हैं। प्रौद्योगिकी में तीव्र प्रगति के साथ, नवीनतम रुझानों और विकास के साथ अद्यतन रहना आवश्यक है, और नाइलिट पाठ्यक्रम ऐसा करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं। इसलिए, यदि आप अपने कंप्यूटर कौशल को बढ़ावा चाहते हैं और अपने करियर की संभावनाओं को बढ़ावा देना चाहते हैं, तो नाइलिट पाठ्यक्रम में दाखिला लेना आपके लिए सही विकल्प हो सकता है।

i-Care

WhatsApp business account



contact no.  
9996994495

**i-Care**  
सर्वश्रेष्ठ शिक्षा, सर्वोत्तम परिणाम

**COACHING CENTRE**  
**Gali No. 2, Rishi Nagar,**  
**Near Bus Stand, Hisar**

# पहले स्वतंत्रता संग्राम के भीष्म पितामह।



हर्ष पांडे  
कॉलमनिस्ट

बाबू वीर कुंवर सिंह एक ऐसा नाम जिनको पूरा देश जानता है और जिनकी बहादुरी को बारंबार प्रणाम करता हैं। क्योंकि उम्र के उस पड़ाव पे उस अदम्य साहस का परिचय देना किसी मामूली शख्स के बस की बात नहीं थी। बाबू वीर कुंवर सिंह हमेशा अपने पौरुष, सत्य निष्ठा और राज धर्म के पालन करने के लिए जाने जाते हैं। जहां अंग्रेजी सरकार के तम के तले बड़े-बड़े राज सिंहासन नतमस्तक हो गए थे, बड़ी बड़ी तलवारों ने दासता स्वीकार कर ली थी, उस प्रतिकूल समय में भी पूरे बिहार और यूपी की बगावत का नेतृत्व उन्होंने 80 वर्ष की उम्र में किया था। 80 वर्ष ...! जी हां आप सब ने सही पढ़ा है। जिस उम्र में सभी राम नाम जपते हैं, इस उम्र में बाबू वीर कुंवर सिंह ने अंग्रेजों के दांत खट्टे किए थे और छह्ठी कि दूध याद दिलाई थी। गोरिल्ला युद्ध में माहिर वीर कुंवर सिंह अकेले सब भारी पड़ रहे थे। चतुर और चालाक अंग्रेज बिल्कुल भौचके थे। उम्र के इस पड़ाव में कोई आदमी इतना साहसी और ओजस्वी कैसे हो सकता है? लेकिन उनको क्या पता कि मां भारती के सच्चे सपूत हर वक्त मातृभूमि की रक्षा में तत्पर रहते हैं और

अपने देश के लिए सर कटवा भी सकते हैं और काट भी सकते हैं। वीर कुंवर सिंह जगदीशपुर के शाही उज्जैनिया राजपूत परिवार में जन्म लेने वाले भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी थे। उनका जन्म 23 अप्रैल 1777 को बिहार के भोजपुर जिले के जगदीशपुर गांव में हुआ था। और उस दिन बिहार ही नहीं पुरी भारतभूमि ऐसा पुत्र रत्न प्राप्त करके बहुत खुश हुई थी। बिहार में 1857 की क्रांति की बागडौर बाबू वीर कुंवर सिंह के पास थी, वे स्वतंत्रता सेनानियों के मुख्य सेनापति के रूप में 80 वर्ष की वृद्धावस्था में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के विरुद्ध साहस के साथ विद्रोह का नेतृत्व कर रहे थे।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बाबू वीर कुंवर सिंह ने अग्रणी और बेहद ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जब मेरठ से क्रांति का बिगुल बजा तो जंगल की ज्वाला की भाँती यह संदेश बिहार और सम्पूर्ण भारत में तेजी से फैल गया, हर ओर से एक नेतृत्व को लेकर लोग ब्रिटिश सेना के खिलाफ विद्रोह करने लगे। बिहार के लोगों ने वीर कुंवर सिंह को ही अपना नेता चुना, उनकी आयु 80 के पार होने के बाद भी उनका साहस व धैर्य कर्तई उस समय कम नहीं था। कुंवर सिंह एक बुद्धिमान एवं चतुर व्यक्ति थे, अपनी चतुराई और सूझबूझ के कारण ही एक बार कुंवर सिंह जी को गंगा पार करनी थी, पर अंग्रेजी सरकार उनके पीछे लगी थी।



बाबू वीर कुंवर सिंह



## हाथ को गंगा में अर्पण करते हुए बाबू वीर कुंवर सिंह।

उनसे बचने के लिए इन्होंने ये अपवाह उड़ा दी कि वे बलिया से हाथियों पर अपनी सेना के साथ नदी पार करेगे परन्तु किया इसका उल्टा, उन्होंने शिवराजपुर से नदी पार कर ली और अंग्रेजों को मुर्ख बना दिया। छापामार युद्ध में उनका कोई सानी नहीं था। अब पुरे बिहार में कुंवर सिंह ने ब्रिटिश सेना के खिलाफ मौर्चा खोल दिया था, फिर 5 जुलाई के दिन दानापुर में उन्होंने विद्रोह किया। इसके बाद कुंवर सिंह के साथ सारे क्रान्तिकारी जगदीशपुर की तरफ बढ़े तथा दो दिन में ही वहाँ पर भी कब्जा कर लिया। मगर अंग्रेजी सेना ने धोखे से कुंवर सिंह को पराजित कर नगर को पूरी तरह तबाह कर दिया। सितंबर माह में कुंवर सिंह को अपना गाँव छोड़कर लखनऊ आना पड़ा। मार्च 1858 में उन्होंने आजमगढ़ को अंग्रेजी हुक्मत से मुक्त करा दिया, मगर कुछ ही समय बाद उन्हें यहाँ से वापस बिहार जाना पड़ा, बिहार जाकर सिंह ने जगदीशपुर में अंग्रेजों से लोहा लिया। बाबू वीर कुंवर सिंह ने यह साबित कर दिया कि वे मां भारती के सच्चे सपूत हैं। जब अंग्रेजों ने उनको गंगा किनारे छल से घेर लिया और उनपे तावड़-तोड़ गोलियां चलाने लगे, इसी अफरा-तफरी में एक गोली उनके बाह मे जा लगी। तभी उन्होंने मां गंगा का आवाह किया और विजयश्री का आशीर्वाद पानी हेतु उस गोली लगे बाह को खुद ही काटकर करके मां गंगा को समर्पित कर दिया। और मां से युद्ध में विजय होने का आशीर्वाद मांगा। खुद ही से खुद के हाथ को काटना बहुत साहस का काम होता है, जो कि हर कोई नहीं कर सकता है। बाबू वीर सिंह ने सचमुच सिंह की भाँति अपना सारा जीवन जिया और मरते दम तक अंग्रेजी दास्तां के खिलाफ लड़ते

से अधिक जगहों पे भारतीयों का नेतृत्व कर अंग्रेजों के दांतों तले चने चबवाए। वर्ष 1966 में भारत सरकार ने उनके नाम डाक टिकट भी जारी किया। वीर कुंवर सिंह के बारे में एक अंग्रेजी हिस्टोरियन की बात जानने योग्य हैं। होम्स ने लिखा कि एक 80 साल के वृद्ध राजपूत ने अपने अद्भुत साहस एवं आन बान से युद्ध लड़ा, और ये तो भगवान का शुक्र हैं कि उनकी आयु उस वक्त 80 साल थी, यदि वों अपने जवानी के दिनों में लड़ते तो अंग्रेजों को 1857 में ही भारत छोड़ना पड़ता। सुभद्राकुमारी चौहान ने अपनी कविता झांसी की रानी में लिखा हैं।

"इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर काम आए

नाना धूधूपंत, ताँतिया, चतुर, अजीमुल्ला सरनाम

अहमद शाह मौलवी ठाकुर वीर कुंवर सिंह सैनिक अभिराम

भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे इनके नाम।"

ऐसे महान बाबू वीर कुंवर सिंह को बारंबार प्रणाम। हम धन्य है कि हमारी वसुंधरा पे ऐसे महापुरुषों ने जन्म लिया, जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि उम्र चाहे कुछ भी हो मनुष्य सफलता कभी भी प्राप्त कर सकता है। बस सफलता प्राप्त करने के लिए चाहिए सही दिशा निर्देश और दृढ़ इच्छाशक्ति। अपनी हौसलों को कभी कम न होने दे।



## लोकस्तंभ में विज्ञापन एवं लेख देने के लिए संपर्क करें।



@theLokStambh

@thelokstambh

www.thelokstambh.com

+91 6202234379

@thelokstambh

@TLSNews01



# चीन से जनसंख्या में आगे निकला भारत।



सत्यम पांडे  
प्रबंध संपादक



## वैश्विक जनसंख्या:

संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के मुताबिक, 2023 के मध्य तक वैश्विक आबादी 8.045 अरब हो जाएगी। अफ्रीका में भी जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। यह अनुमान लगाया गया है कि दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप 2100 तक अपनी जनसंख्या में 1.4 से 3.9 बिलियन निवासियों की वृद्धि देखेगा। 10 मिलियन से अधिक निवासियों वाले आठ देशों, जिनमें से अधिकांश यूरोप में हैं, ने पिछले एक दशक में अपनी आबादी को कम होते देखा है। 2011 और 2021 के बीच 30 लाख से अधिक निवासियों को खोने के कारण जापान भी अपनी उम्र बढ़ने की आबादी के कारण गिरावट देख रहा है। इस बीच, पूरे दुनिया की जनसंख्या में केवल 2090 के दशक में गिरावट आने की उम्मीद है, 10.4 बिलियन के चरम पर पहुंचने के बाद, संयुक्त राष्ट्र ने अनुमान लगाया है।

## प्रजनन दर:

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, भविष्य की जनसंख्या वृद्धि उस मार्ग पर अत्यधिक निर्भर है जो भविष्य की उर्वरता लेगी।

द वर्ल्ड पॉपुलेशन प्रॉस्पेक्टस (2022) ने कहा कि वैश्विक प्रजनन क्षमता 2021 में प्रति महिला 2.3 बच्चों से गिरकर 2050 में 2.1 होने का अनुमान है।

## दीर्घायु में वृद्धि:

कुल मिलाकर, हाल के वर्षों में जीवन प्रत्याशा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विश्व वैस्तर पर, जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 2019 में 72.8 वर्ष से बढ़कर 2050 में 77.2 वर्ष होने की उम्मीद है।

## अंतर्राष्ट्रीय प्रवास:

अंतर्राष्ट्रीय प्रवास जन्म या मृत्यु की तुलना में जनसंख्या परिवर्तन का एक बहुत छोटा घटक है। हालांकि, कुछ देशों और क्षेत्रों में जनसंख्या के आकार पर प्रवासन का प्रभाव महत्वपूर्ण है।

भारत के सबसे अधिक आबादी वाला देश बनने के बाद चीन ने ली चुटकी, कहा गुणवत्ता मायने रखती है, आकार नहीं। भारत पर मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए, चीनी प्रवक्ता ने कहा कि प्रतिभा सबसे ज्यादा मायने रखता है, वो चीन के पास हैं। "किसी देश के जनसांख्यिकीय लाभांश का आकलन करते समय, हमें न केवल इसके आकार बल्कि इसकी गुणवत्ता को भी देखने की जरूरत है। आकार मायने रखता है, लेकिन जो अधिक मायने रखता है वह है प्रतिभा संसाधन। 1.4 बिलियन चीनी में से लगभग 900 मिलियन कामकाजी उम्र के हैं और औसतन 10.9 साल की शिक्षा," प्राप्त किए हुए हैं, वांग वेनबिन ने कहा।

# फिर मोदी पर बरसे सत्यपाल मलिक!



लक्ष्य बरवेजा  
परामर्श संपादक

14 अप्रैल 2023 को द वायर के यूट्यूब चैनल पर सत्यपाल मलिक (पूर्व गवर्नर जम्मू व कश्मीर) का करण थापर के साथ एक इंटरव्यू आया जिसमें उन्होंने पुलवामा, कश्मीर, करषण को लेकर खुलकर बात। सत्यपाल मलिक का इंटरव्यू सरकार की जड़ों को हिला देने वाला है। यह इंटरव्यू 1 घंटे 9 मिनट का है और दा वायर के ऑफिशल युट्यूब चैनल पर अपलोड किया गया है।

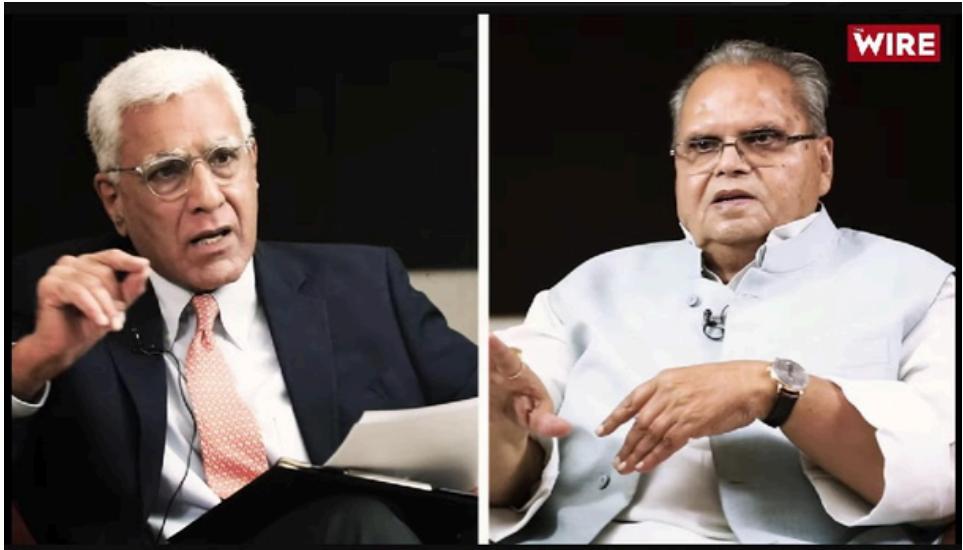
इंटरव्यू में करण थापर ने पुलवामा के बारे में सवाल किया तो सत्यपाल मलिक ने बताया कि इतना बड़ा काफिला कभी भी सड़क के मार्ग से नहीं जाता इतने बड़े काफिले के लिए हमेशा वायु मार्ग इस्तेमाल किया जाता है और उस दिन भी फौज ने सरकार से 5 विमानों की मांग की थी पर होम मिनिस्ट्री से नकारात्मक उत्तर मिलने के बाद उस काफिले को सड़क के मार्ग से ही ले जाया गया। उन्होंने आगे बताते हुए कहा कि

उस में सड़क पर 8 से 10 लिंकेज हैं जिसको ब्लॉक नहीं किया गया था और वह गाड़ी जिसमें लगभग 300 किलो आरडीएक्स रखा गया था वह 10-12 दिनों तक उन्हीं सड़कों पर घूम रही थी और यह हमारी इंटेलिजेंस का फैलियर था कि हम उसे पकड़ नहीं सके उन्होंने आगे बताते हुए कहा कि उन्होंने उसी शाम प्रधानमंत्री को फोन करके बताया था कि हमारी गलती की वजह से हुआ है पर उन्हें चुप रहने को कहा गया और कैसे एक सरकार की गलती को छुपा लिया गया जिसकी वजह से देश के 40 जवान शहीद हुए। उन्होंने देवेंद्र सिंह, जिस पर आरोप लगाए गए थे कि वह धूसखोर है और आतंकियों से मिला है, उसके बारे में बताते हुए कहा कि वह उसे जानते हैं, वह जब भी हवाई अड्डे पर उतरते थे तो देवेंद्र सिंह उन्हें मिलता था पर उन्हें कभी उस पर शक नहीं हुआ।



पुलवामा हमला और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी





### करण थापर एवं सत्यपाल मलिक

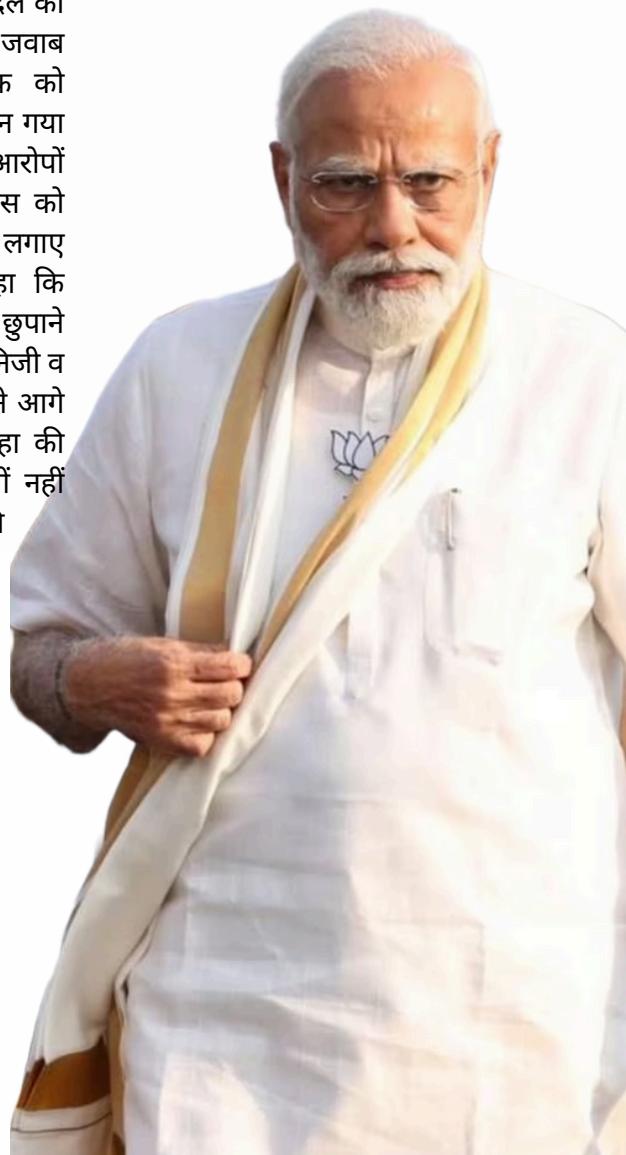
दिया। उन्होंने अंबानी, हसीन बराबू, राम माधव का नाम लेते हुए करप्शन करने का आरोप लगाए और कहा कि यह प्रधानमंत्री के करीबी लोग हैं। उन्होंने बताया कि जब वह गोवा के गवर्नर थे तब उन्होंने करप्ट लोगों की शिकायत प्रधानमंत्री से की थी पर उन लोगों पर कोई एक्शन नहीं हुआ और इस घटना के 6 से 8 महीने बाद उनका तबादला कश्मीर में कर दिया गया। उन्होंने बताया कि उन्होंने जितेंद्र सिंह की शिकायत प्रधानमंत्री जी को की थी कि वह पीएमओ का नाम लेकर करप्शन कर रहा है पर आज भी जितेंद्र सिंह वही काम करते हैं जहां वह थे। इंटरव्यू लेते समय करण थापर ने कहा कि "आप जो यह सब बोल रहे हैं इससे मोदी जी बहुत नाराज होंगे, सरकार बहुत नाराज होगी"। इसके उत्तर में मलिक ने कहा कि "क्या कर लेंगे, मैं फकीर आदमी हूं, जेल में डाल देंगे, बहुत बार गया हूं जेल"। यह इंटरव्यू पब्लिक होने के बाद मलिक को सीबीआई से समन आया है कुछ लोग इसे

बदले की राजनीति का नाम दे रहे हैं, पर इस पर खुद मलिक जी ने साफ करते हुए कहा कि "मैंने जो कंप्लेंट रिलायंस इंश्योरेंस स्कीम के खिलाफ डाली थी उसके बारे में कुछ जानकारी लेने के लिए यह समन आया है और इसके लिए मुझे सीबीआई के पर आज ऑफिस नहीं जाना बल्कि वह अकबर रोड गेस्ट हाउस मैं मुझसे मिलने आएंगे"। बदले की राजनीति के आरोप पर अमित शाह ने जवाब देते हुए कहा कि सत्यपाल मलिक को सीबीआई से दूसरी या तीसरी बार समन गया है और यह बीजेपी के ऊपर लगाए हुए आरोपों की वजह से नहीं है यह इंश्योरेंस केस को लेकर है। अमित शाह ने आगे इंटरव्यू में लगाए गए आरोप का जवाब देते हुए कहा कि बीजेपी ने ऐसी कोई चीज नहीं की इसे छुपाने की जरूरत पड़े उन्होंनेयह सब आरोप निजी व राजनीतिक कारणों से लगाए हैं। उन्होंने आगे सत्यपाल पर प्रत्यारोप करते हुए कहा कि "जब आप सत्ता में हैं तो आत्मा क्यों नहीं जागती है ... इस तरह की टिप्पणियों की

विश्वसनीयता लोगों, पत्रकारों को दिखनी चाहिए ... अगर यह सब सच है, तो वह राज्यपाल रहते हुए चुप क्यों थे.. ये मुद्दे नहीं हैं। मैं देश की जनता से कहना चाहता हूं कि भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार ने ऐसा कोई काम नहीं किया है जिसे छुपाने की जरूरत हो। अगर हमें छोड़कर जाने के बाद व्यक्तिगत, राजनीतिक स्वार्थ के लिए कुछ टिप्पणी की जाती है तो वह लोगों, मीडिया द्वारा मूल्यांकन किया जाना चाहिए ..."। 21 अप्रैल को कुछ खाप पंचायत के नेता मलिक जी से मिलने पहुंचे जिनके लिए उन्होंने भोजन की व्यवस्था घर से बाहर की इसकी वजह उन्होंने घर का छोटा होना बताया। पार्क में खाना खिलाने और भीड़ जमा करने की वजह से वहां पुलिस आ गई और उन्हें व उनके अन्य साथियों को पुलिस स्टेशन ले गई। बाहर आने के बाद मीडिया से बात करते हुए उन्होंने साफ किया कि पुलिस ने यह कदम शासन के दबाव में उठाया था और उन्होंने अपनी गिरफ्तारी खुद दी थी। उन्होंने इसके बाद बताया कि अब यह लड़ाई 24 तक ऐसे ही जारी रहेगी।



गृहमंत्री अमित शाह



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी



समृद्धि रत्न  
परामर्श संपादक

एस एस राजामौली के निर्देशन में बनी फ़िल्म 'आरआरआर' ने ऑस्कर में इतिहास रच दिया है। रामचरण तेज़ा और जूनियर एनटीआर की फ़िल्म आरआरआर के गाने 'नाटू-नाटू' ने बेस्ट ओरिजिनल सॉन्ग का खिताब आपने नाम कर लिया है।

इसी के साथ आरआरआर ने ऑस्कर 2023 में भारत का सिर गर्व से उच्चा कर दिया है। इस गाने को ऑस्कर अवार्ड 2023 के बेस्ट सॉन्ग केटेगरी में शॉर्टलिस्ट किया गया था। इस लिस्ट में 15 और गाने भी शामिल थे पर सब गानों को पीछे छोड़ कर नाटू-नाटू बनी ऑस्कर विनिंग सॉन्ग। सोशल मीडिया पर सेलिब्रिटीज़ दे रहे बधाई गाने को ऑस्कर अवार्ड मिलने के बाद से सोशल मीडिया पर सभी फैन्स ढेर सारी बधाई दे रहे हैं जिनमें शामिल है जाने माने फ़िल्म स्टार्स और पॉलिटिशियन।

मशहूर सिंगर और कंपोजर ए आर रहमान ने पोस्ट कर आरआरआर की पूरी टीम को बधाई दी। एक्टर विक्की कौशल, अजय देवगन, अभिषेक बच्चन, करण जौहर, कंगना रनौत, प्रियंका चोपड़ा ने भी सोशल मीडिया पर ट्वीट और पोस्ट के ज़रिए अपनी खुशी ज़ाहिर की हैं।

भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने भी आरआरआर टीम को बधाई दी उन्होंने कहा "असाधारण! 'नाटू नाटू' की लोकप्रियता वैश्विक है वही रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने भी आरआरआर की पूरी टीम को बधाई देते हुए लिखा- बेहद पॉपुलर सॉन्ग 'नाटू-नाटू' को बेस्ट ओरिजिनल सॉन्ग केटेगरी में ऑस्कर अवार्ड जीतना ग्लोबल स्टेज पर भारतीय सिनेमा के लिए एक बड़ा समय हैं। इस बड़ी कामयाबी के लिए पूरीआरआरआर की टीम को ढेरों शुभकामनाएं।

### आरआरआर की बॉक्स ऑफिस पर कमाई

फ़िल्म आरआरआर ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ कमाई की है। फ़िल्म ने भारत में 750 करोड़ का कलेक्शन किया है। वही इस फ़िल्म ने वर्ल्डवाइड भी 1100 करोड़ से ज्यादा की कमाई की है। दुनिया भर में फ़िल्म आरआरआर को बहुत प्यार मिला।

### जूनियर एनटीआर क्या बोले फ़िल्म को लेकर

फ़िल्म के एक्टर जूनियर एनटीआर ने अपनी खुशी ज़ाहिर करते हुए कहा कि मुझे 'आरआरआर' पर बहुत गर्व महसूस हो रहा है। सभी भारतीय को इतना प्यार देने के लिए धन्यवाद। उन्होंने आगे कहा कि संगीतकार एम एम किरवानी और गीतकार चंद्राबोस को ऑस्कर प्राप्त करते हुए देखना उनके जीवन का सबसे बेहतरीन पाल था।



ऑस्कर के साथ सौन्ग के कंपोजर



# 'द एलिफेंट व्हिस्परस' ने जीता बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट फिल्म का अवॉर्ड।



**कपिल नागल  
कॉलमनिस्ट**

'द एलिफेंट व्हिस्परस', जिसने सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट की श्रेणी में अकादमी पुरस्कार नामांकन प्राप्त किया, ने उसी के लिए ऑस्कर घर ले जाकर देश को गौरवान्वित किया है।

कार्तिकी गोंसाल्वेस-निर्देशन वाली डॉक्यूमेंट्री 'हॉलआउट', 'हाउ छू यू मेजरमेंट ए ईयर', 'द मार्था मिशेल इफेक्ट' और 'स्ट्रेंजर एट द गेट' के खिलाफ प्रतिस्पर्धा कर रही थी। नेटफ्लिक्स फिल्म निर्देशक कार्तिकी गोंसाल्विस के लिए एक बहुत ही पेशेवर और साथ ही व्यक्तिगत उपलब्धि है, व्यर्योंकि यह उनके निर्देशन की पहली फिल्म थी। गोंसाल्वेस, जिन्होंने एक वन्यजीव और सामाजिक वृत्तचित्र फोटोग्राफर, फोटो जर्नलिस्ट और सिनेमैटोग्राफर के रूप में एक सफल कार्यकाल का आनंद लिया, ने एक अलग कारण के लिए कैमरे के पीछे अभिनय करने के लिए एक समृद्ध कैरियर गुनीत मोंगा (सिख्या एंटरटेनमेंट के सीईओ) द्वारा निर्मित, इस फिल्म ने अपने विषय वस्तु और निर्बाध निष्पादन के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म बिरादरी से बहुत प्रशंसा प्राप्त की है। रिपोर्ट्स की मानें तो



ऑस्कर विजेता बोम्मन एंड बेल्ली के साथ प्रधानमंत्री मोदी फिल्म की मेकिंग भी फिल्म से कम शानदार नहीं है। गोंजाल्विस को अपना पहला प्रोजेक्ट पूरा करने में पांच साल लगे। वैरायटी पत्रिका के साथ एक साक्षात्कार में, उसने खुलासा किया कि उसने और मोंगा ने स्वदेशी कट्टुनायकन जनजाति के साथ मिलकर काम किया था, जो बोम्मन और बेली का हिस्सा हैं।

दुनिया भर में कई ए-लिस्ट हस्तियां 'द एलिफेंट व्हिस्परस' की उत्साही प्रशंसक बन गईं। इन्हीं में से एक थीं प्रियंका चोपड़ा। उन्होंने इंस्टाग्राम पे लिखा, "भावनाओं से भरा एक बवंडर! हाल ही में मैंने जो सबसे दिल को छू लेने वाले डॉक्यूमेंट्री देखे हैं उनमें से एक... बहुत अच्छा लगा! वही पूरी डॉक्यूमेंट्री की टीम का प्रधानमंत्री मोदी ने भी हौसला बढ़ाया।



ऑस्कर के साथ दा एलीफेंट व्हिस्परस के प्रोड्यूसर



# IPL 2023: आधा सीजन खत्म, जानिए क्या रहा खास!



केशव शर्मा  
प्रबंध संपादक

## सीएसके की शानदार वापसी।

पिछले सीजन अच्छा प्रदर्शन ना करने के दबाव से उभरते हुए सीएसके ने महेंद्र सिंह धोनी की अगुवाई में आईपीएल 2023 में शानदार प्रदर्शन करते हुए अंकतालिका में सबसे ऊपर विराजमान है। सीएसके ने 7 में से 5 मैच जीतकर 10 पॉइंट्स के साथ टॉप पे बनी हुई है। इसके बाद पिछले सीजन की चैंपियन गुजरात टाइटन भी 10 पॉइंट के साथ दूसरे नंबर पर है, राजस्थान रॉयल्स 8 पॉइंट के साथ तीसरे नंबर पर, लखनऊ सुपरजाइंट्स चौथे और रॉयल चैलेंज बंगलुरु पांचवें नंबर पर बनी हुई हैं।

## आईपीएल 2023 में ओपनर्स का दबदबा।

इस सीजन में सबसे ज्यादा रन बनाने वालों

की बात करें तो ओपनर्स का खास दबदबाहा है इस सीजन में अभी तक 7 मैचों में 405 रन बनाकर आरसीबी के ओपनर एवं कैप्टन फाफ दू प्लेसिस ऑरेंज कैप की रेस में सबसे आगे हैं, उनका पीछा कर रहे हैं चेन्नई के ओपनर बल्लेबाज डेवोन कॉन्वे जो अभी तक 314 रन बनाकर दूसरे नंबर पर विराजमान है। तीसरे नंबर पर 306 रनों के साथ दिल्ली कैपिटल्स के कैप्टन और ओपनर डेविड वॉर्नर, चौथे नंबर पर 284 रनों के साथ गुजरात टाइटन के ओपनर शुभमन गिल और पांचवें नंबर पर 279 रनों के साथ आरसीबी के ओपनर विराट कोहली मौजूद हैं। कुल मिलाकर देख सकते हैं कि इस आईपीएल सीजन में ओपनर्स का खास दबदबा है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि क्रिकेट भारत का सबसे लोकप्रिय खेल है, और उसमें भी आईपीएल (इंडियन प्रीमियर लीग) भारतीय दर्शकों के लिए एक त्यौहार के समान है। इसका 16वाँ संस्करण अभी भारत में खेले जा रहे हैं, जिसमें 10 टीमें भाग ले रही हैं, IPL 2023 का आधा सीजन खत्म हो चुका है, सभी टीमों ने अपने 7-7 मैच खेल चुके हैं। आज हम इस लेख के माध्यम से आईपीएल 2023 विश्लेषण करेंगे कि आधे सीजन खत्म होने के बाद इस सीजन में क्या खास रहा और किस खिलाड़ी ने अभी तक सबसे अच्छा प्रदर्शन किया है और किस खिलाड़ी ने नाम बड़े और दर्शन छोटे होने के मुहावरों को सार्थक किया है, इस पर चर्चा करेंगे।





गेंदबाजी में युवा भारतीय गेंदबाजों का जलवा।

गेंदबाजी की बात करें तो भारतीय युवा गेंदबाजों ने इस सीजन में काफी ज्यादा प्रभावित किया इसमें सबसे ऊपर नाम है पंजाब के धारदार युवा गेंदबाज अर्शदीप सिंह और आरसीबी के युवा गेंदबाज मोहम्मद सिराज का जिन्होंने इस सीजन में अभी तक खेले गए सात मैचों में 13 विकेट लेकर पर्फॉर्मेंस के रेस में कमशः दूसरे और तीसरे नंबर पर बने हुए हैं। तालिका में सबसे ऊपर नाम है अफगानिस्तान के जाटूगर स्पिनर राशिद खान का जिन्होंने सात मैचों में 14 विकेट लिया है। इनके अलावा राजस्थान के यूज़वेंट्र चहल और चेन्नई के युवा गेंदबाज तुषार देशपांडे 12 विकेट के साथ क्रमशः चौथे और पांचवे पर बने हुए हैं।

### इस सीजन दिल्ली कैपिटल्स ने किया निराश।

ऋषभ पंत के चोटिल होकर इस सीजन में ना खेलने के कारण दिल्ली कैपिटल्स की हालात कुछ ठीक नहीं है उन्होंने अभी तक सात मैचों में से पांच में करारी हार का सामना किया है। और सिर्फ दो मुकाबले ही जीत सकी है अगर ऐसा ही चलता रहा तो इस सीजन में उनका प्लेओफ में पहुंचना मुश्किल हो जाएगा। डेविड वॉर्नर की अगुवाई वाली दिल्ली कैपिटल्स ने अभी तक कुछ खास प्रदर्शन नहीं किया है, यही हालात सनराइजर्स हैदराबाद के भी हैं।

नाम बड़े और दर्शन छोटे के मुहावरों को सार्थक करते हुए कुछ खिलाड़ियों ने उसी तरह के प्रदर्शन अभी तक इस आईपीएल सीजन में किया है इसमें सबसे ऊपर नाम है चेन्नई सुपर किंस के किमती खिलाड़ी बेन स्टोक्स और मुंबई इंडियंस के गेंदबाज जोफ्रा आर्चर का। भारतीय खिलाड़ियों की बात करें तो इसमें सबसे ऊपर नाम है दिल्ली कैपिटल के पृथकी शॉ का जो अभी तक संर्घण्ड कर रहे हैं।

### इस सीजन में क्या रहा खास ?

IPL 2023 में बहुत सी नई बातों को जोड़ा गया है जो इस सीजन को काफी खास बनाती हैं, इसमें सबसे पहले आता है स्थानीय भाषाओं में कमेंट्री को जोड़ा जाना। इस बार हिंदी, इंग्लिश, पंजाबी, भोजपुरी, तमिल, तेलुगू, उरिया, कन्नड़ा आदि अन्य भाषाओं में भी कमेंट्री की जा रही है जिससे लोग अपने स्थानीय भाषा में मैच का लुप्त उठा रहे हैं। इनमें दर्शकों को सबसे ज्यादा रोमांच भोजपुरी एंवं पंजाबी भाषा की कॉमेंट्री से मिल रही है।

### दर्शक मुफ्त में देख सकते हैं पूरा IPL 2023 सीजन:

आईपीएल इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ हुआ है की क्रिकेट प्रेमियों को आईपीएल देखने का कोई शुल्क नहीं देना पड़ रहा है, ऐसा संभव हो सका है अंबानी के जिओ सिनेमा के वजह से, जिओसिनेमा ने इस बार के लिए मुफ्त में IPL दिखाने का फैसला किया है। यह अलग बात है कि इसके पीछे जिओ की अपनी अलग व्यापार नीति है, जिसे वह आगे भुनाने की कोशिश करेंगे, लेकिन फिर भी दर्शकों को आईपीएल का बेहतरीन रोमांच मुफ्त में मिल रहा है इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है।

### इस सीजन इंपैक्ट प्लेयर का कॉन्सेप्ट भी लागू किया गया।



अर्शदीप सिंह

क्रिकेट इतिहास में इंपैक्ट प्लेयर का कांसेप्ट पहली बार आईपीएल 2010 में लागू किया गया है, इसके तहत किसी एक अन्य खिलाड़ी जो कि शुरुआती प्लेइंग 11 में नहीं है उन्हें आप इंपैक्ट प्लेयर के तौर पर मुकाबले में उतार सकते हैं वह चाहे बल्लेबाज हो, गेंदबाज हो या फिर ऑलराउंडर हो उन्हें किसी भी खिलाड़ी से सब्सीट्यूट करके मुकाबले में उतार सकते हैं। इस नियम का दर्शकों के बीच मिलाजुला असर रहा। कुछ टीम में इस नियम का भरपूर इस्तेमाल कर रही हैं तो कुछ टाइम में अभी तक इसका इस्तेमाल करने में सफल नहीं हो पाई है। इस सीजन में एक और नियम को जोड़ा गया है जिसके तहत टीमें वाइड और नो बॉल को भी रिव्यू कर सकती हैं।



रिंकू सिंह

आईपीएल 2023 अभी तक काफी सफल रहा है, इस टूर्नामेंट ने युवा खिलाड़ियों को ऐसा मंच प्रदान किया है, जहां वे अपने हुनर को आजमा और दुनिया को दिखा सकें, इसी कड़ी में कोलकाता नाइट राइडर्स के युवा ऑल राउंडर रिंकू सिंह 1 ओवर में 5 छक्के मारकर अपनी टीम को अद्वितीय विजय दिलवाई थी, ऐसे ही अनेक युवा खिलाड़ी के पास यह मौका है कि वह आगे आकर और अपनी टीम के लिए कुछ ऐसा कारनामा कर जाए ताकि दुनिया उन्हें याद कर सकें। हमें उम्मीद है आईपीएल सीजन में भी कुछ ऐसा खिलाड़ी मिलेंगे जो आगे चलकर देश का नाम रोशन करेंगे।

# कृषि क्षेत्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका।



## हरित क्रांति:

सन् 1960 में देश का खाद्यान्न उत्पादन बढ़कर 5 करोड़ टन तक पहुँचा किन्तु भारत जैसे विशाल देश के लिए यह पर्याप्त नहीं था। डॉ० नारमन बारबाग एवं डॉ०. एम. एस. स्वामीनाथन ने गेहूँ की देशी किस्मों का विकास किया जिसने भारत में हरितक्रांति को जन्म दिया जिससे हमारे राष्ट्र का अन्न उत्पादन 1970 के दशक तक बढ़कर 15 करोड़ टन हो गया। गेहूँ के उत्पादन में तीन गुना से अधिक वृद्धि हुई, जबकि अन्याजों के उत्पादन में कुल वृद्धि केवल दो गुना थी। भारत खाद्यान्न में आत्म- निर्भर हो गया, यहाँ तक कि भारत खाद्यान्न निर्यात करने की स्थिति में था। आज धान एवं गेहूँ में भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। वर्ष 2050 तक वैश्विक जनसंख्या, 9 बिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है जिस कारण वर्ष 2050 तक खाद्य उत्पादन में 70 प्रतिशत की वृद्धि की जरूरत होगी। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में जनवायु परिवर्तन और बुनियादी ढाँचों की कमियों के कारण आज कृषि आधुनिक और गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। इस संदर्भ में कृषि में आधुनिक

ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का समावेश अनिवार्य है।

**खाद्य सुरक्षा के साथ पोषण सुरक्षा एवं जलवायु परिवर्तन हेतु कृषि प्रौद्योगिकिया:**

अभूतपूर्व औद्योगिक और आर्थिक विकास के साथ भारत पर्याप्त भोजन उत्पादन का लक्ष्य पूर्ण करने की दिशा में अग्रसर हैं परन्तु महिलाओं और बच्चों को पोषणयुक्त आहार उपलब्ध कराना भी एक चुनौती है। भारत दुनिया में सबसे बड़ी कुपोषित आबादी का घर है। कुपोषित बच्चों में डायरिया, निमोनिया और मलेरिया जैसी सामान्य बचपन की बीमारियों से मृत्यु का खतरा अधिक होता है।

कुपोषण का मुकाबला करने के लिए विभिन्न रणनीतियों की चर्चा नीचे की गई है-

## 1. खाद्य प्रबलीकरण (फॉटोटिफिकेशन)

यह एक ऐसी प्रक्रिया हैं जहाँ खाद्य पदार्थ भौतिक समामेलन के माध्यम से विशेष पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसका सबसे बढ़िया उदाहरण आयोडीन युक्त नमक है, जहाँ नमक के साथ साथ आयोडीन की वांछित मात्रा ग्रहण की जाती है।



भारत कृषि प्रधान देश होने के साथ-साथ 6 लाख से अधिक गांवों का देश। आजादी के बाद कृषि क्षेत्र में, हमने एक लंबा एवं संघर्ष भरा सफर तय किया है। सन् 1910 में भारत 15 करोड़ जनसंख्या वाला देश था, किन्तु भारत के पास पर्याप्त अन्न नहीं था जिससे कि हर एक नागरिक का भरण-पोषण किया जा सके। वर्ष 1943 में भारत विश्व का सबसे अधिक खाद्य संकट से पीड़ित देश था। बंगाल में अकाल के कारण पूर्वी भारत में 40 लाख लोग भूख के कारण मारे गए थे। हाँलाकि वर्ष 1947 में आजादी के बाद वर्ष 1967 तक, सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर कृषि क्षेत्रों के विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया गया लेकिन देश की जनसंख्या वृद्धि खाद्य उत्पादन की तुलना में बहुत तीव्र गति से बढ़ रही थी। लगातार सूखे एवं भूखमरी के कारण देश के हालात और बिजर रहे थे।



## 2. चिकित्सा अनुपूरक:

यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ विशेष पोषक तत्वों को गोली या कैप्सूल के रूप में लोगों को सीधे ही दिया जाता है, जैसे गर्भवती महिलाओं को आयरन की गोलियों की आपूर्ति।

### सूचना संचार तकनीकियां (आईसीटी) का कृषि में समावेश।

सूचना संचार तकनीकियां (आईसीटी) बढ़ी हुई खाद्य उत्पादन की माँग को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इनके उपयोग से आज किसान नवीनतम अप-टू-डेट कृषि आधारित सूचना एवं जानकारी प्राप्त कर बेहतर सुविचारित निर्णय ले रहे हैं। आज समय की माँग खाद्य सुरक्षा में सुधार के साथ-साथ किसानों द्वारा अधिक आय अर्जित करना भी है जिसके लिए किसानों का आधुनिक कृषि की नवीन सूचनाओं एवं ज्ञान से जुड़ना अति आवश्यक है।

किसानों को कृषि के प्रत्येक चरण में मौसम पूर्वानुमान, इनपुट प्रबंधन, बीजों की उपलब्धता, कीट और रोग प्रबंधन एवं मार्केटिंग की विस्तृत जानकारी की आवश्यकता होती है। इन आवश्यक सूचनाओं की प्रकृति के आधार पर किसान अपने पसंदीदा सूचना स्रोतों जैसे साथी किसानों, प्रगतिशील किसानों, टेलीविजन, रेडियो, समाचार-पत्रों एवं फोन का उपयोग करते हैं, जो आईसीटी के फैलाव के कारण ही संभव हो पाया है।

भारत में सूचना संचार तकनीकियों (ICTS) का उपयोग एवं विकास निम्नलिखित प्रोजेक्ट्स् द्वारा क्रमबद्ध हुआ जो आज स्मार्ट कृषि की ओर अगसर है।

#### मोबाइल ऐप:

स्मार्ट कृषि हेतु आज ऐसे मोबाइल ऐप उपलब्ध हैं, जो नवीनतम कृषि जानकारी जैसे कीटों और बीमारियों की पहचान,

मौसम के बारे में रीयल-टाइम डेटा, तूफानों के बारे में पूर्व चेतावनी, स्थानीय बाजार सर्वोत्तम मूल्य, बीज, उर्वरक आदि की जानकारी किसानों को उनके द्वारा तक देते हैं।

#### सेंसर:

पानी, प्रकाश, आर्द्रता और तापमान प्रबंधन तथा मृदा स्कैनिंग के लिए विभिन्न प्रकार के सेंसर का उपयोग किया जाता है। दूरस्थ निगरानी एवं लगातार डेटा एकत्र करने हेतु उपग्रह और ड्रोन आधारित आईटी सिस्टम दूरसंचार प्रौद्योगिकियाँ जैसे उन्नत नेटवर्किंग और जीपीएस।

**इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT)** आधारित समाधान, रोबोटिक्स और स्वचालन को को सक्षम करने के लिए हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर।

'भारत निकटम भविष्य में स्मार्ट कृषि की प्रौद्योगिकि प्रयोग निम्न दो कृषि क्षेत्रों में सुचारू रूप से कर सकता है।



#### परिशुद्ध कृषि (प्रीसिजन फार्मिंग):

इसके अंतर्गत फसल एवं मृदा में 'सही-इनपुट' 'सही-समय' में सही-मात्रा' में सही 'जगह' पर और 'स्टीक- 'तरीके

#### स्वचालित (आटोमेटेड) कृषि:

सेंसर, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), डेटा संग्रह डेटा विश्लेषण उपकरण एवं आईटी सिस्टम आधारित कृषि - स्मार्ट कृषि के बीच अव्यय है जो कृषि को स्वचालित (आटोमेटेड) बनाते हैं।



# क्या लीगल हो जाएगा समलैंगिक विवाह?



उज्जवल भारद्वाज  
कॉलमनिस्ट

समान-सेक्स विवाह मामले की सुनवाई करते हुए, भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) डी वाई चंद्रचूड़ ने गुरुवार को पूछा कि क्या दो पति-पत्नी का अस्तित्व, जो अलग-अलग लिंग से संबंध रखते हैं, विवाह के लिए आवश्यक है।

"हमें विवाह की विकसित धारणा को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है। क्योंकि क्या शादी के लिए बाइनरी जेंडर से संबंध रखने वाले दो पति-पत्नी का होना जरूरी है?" सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा। भारत में समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की संविधान पीठ द्वारा सुनवाई का आज तीसरा दिन है। CJI ने बाद में कहा, "क्या होता है जब घरेलू हिंसा होने पर एक विषमलैंगिक युगल होता है ... बच्चों पर किस तरह का प्रभाव होता है ... विषमलैंगिक होने के लिए इतना अधिक ... पिता के घर वापस आने के बारे में क्या होता है जो मां की पिटाई करता है और

लिए पैसे मांगता है।" कुछ भी पूर्ण नहीं है...? ट्रोल किए जाने की कीमत पर... अदालत में हम जो कहते हैं उसका जवाब ट्रोल में होता है, अदालत में नहीं। "सीजेआई ने कहा कि समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर करके, सुप्रीम कोर्ट ने न केवल सहमति से समान लिंग के वयस्कों के बीच संबंधों को मान्यता दी बल्कि यह भी स्वीकार किया कि समलैंगिक संबंध न केवल शारीरिक बल्कि भावनात्मक, स्थिर संबंध भी हैं। उन्होंने कहा, "जिस क्षण हमने कहा है कि यह अब धारा 377 के तहत एक अपराध नहीं है, इसलिए हम अनिवार्य रूप से विचार करते हैं कि आप दो व्यक्तियों के बीच स्थिर विवाह जैसे संबंध बना सकते हैं, जो इसे संयोग नहीं बल्कि उससे कुछ अधिक मानते हैं, जो यह केवल शारीरिक संबंध नहीं बल्कि एक स्थिर भावनात्मक संबंध है, जो हमारी संवैधानिक व्याख्या की एक घटना है।" CJI ने यह भी कहा कि अदालत पहले ही मध्यवर्ती चरण में पहुंच चुकी है, जो इस बात पर विचार करती है कि समान लिंग के लोग "स्थायी विवाह जैसे रिश्तों" में हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, CJI ने कहा कि SMA (विशेष विवाह अधिनियम) के तहत,



CJI डीवाई चंद्रचूर

जिसके लिए जोड़ों को अपने "इच्छित विवाह" की सूचना देने की आवश्यकता होती है, समाज के सबसे कमज़ोर वर्गों, हाशिए पर रहने वाले समुदायों या अल्पसंख्यकों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। अंत में, सीजेआई ने कहा कि बेंच अयोध्या मामले की सुनवाई की तरह ही इस मामले की दैनिक आधार पर सुनवाई करेगी। शीर्ष अदालत ने बुधवार को इस मामले को समयबद्ध तरीके से खत्म करने की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि अभी और भी मामले हैं जिन पर सुनवाई होनी बाकी है। याचिकाकर्ता चाहते हैं कि 1954 का विशेष विवाह अधिनियम "पुरुष और महिला" के बजाय "जीवनसाथी" के बीच विवाह को फिर से परिभाषित करे। कल की सुनवाई के दौरान, समान-सेक्स विवाह के लिए कानूनी मान्यता की मांग करने वाले याचिकाकर्ताओं ने शीर्ष अदालत से आग्रह किया कि वह अपनी "पूर्ण शक्ति, प्रतिष्ठा और नैतिक अधिकार" का उपयोग करके समाज को इस तरह के संबंध को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करे ताकि LGBTQIA के लोग "गरिमापूर्ण" नेतृत्व कर सकें। याचिकाकर्ताओं में से एक की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी ने कहा था कि राज्य को आगे आना चाहिए और समलैंगिक विवाह को मान्यता प्रदान करनी चाहिए। इससे पहले कल, केंद्र ने शीर्ष अदालत से आग्रह किया कि सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को कार्यवाही में पक्षकार बनाया जाए, यह कहते हुए कि इस मुद्दे पर उनका विचार प्राप्त किए बिना कोई भी निर्णय वर्तमान "प्रतिकूल अभ्यास" को अधूरा और छोटा कर देगा।

# तारेक फतेहः पाकिस्तान में जन्मा एक सच्चा भारतीय।



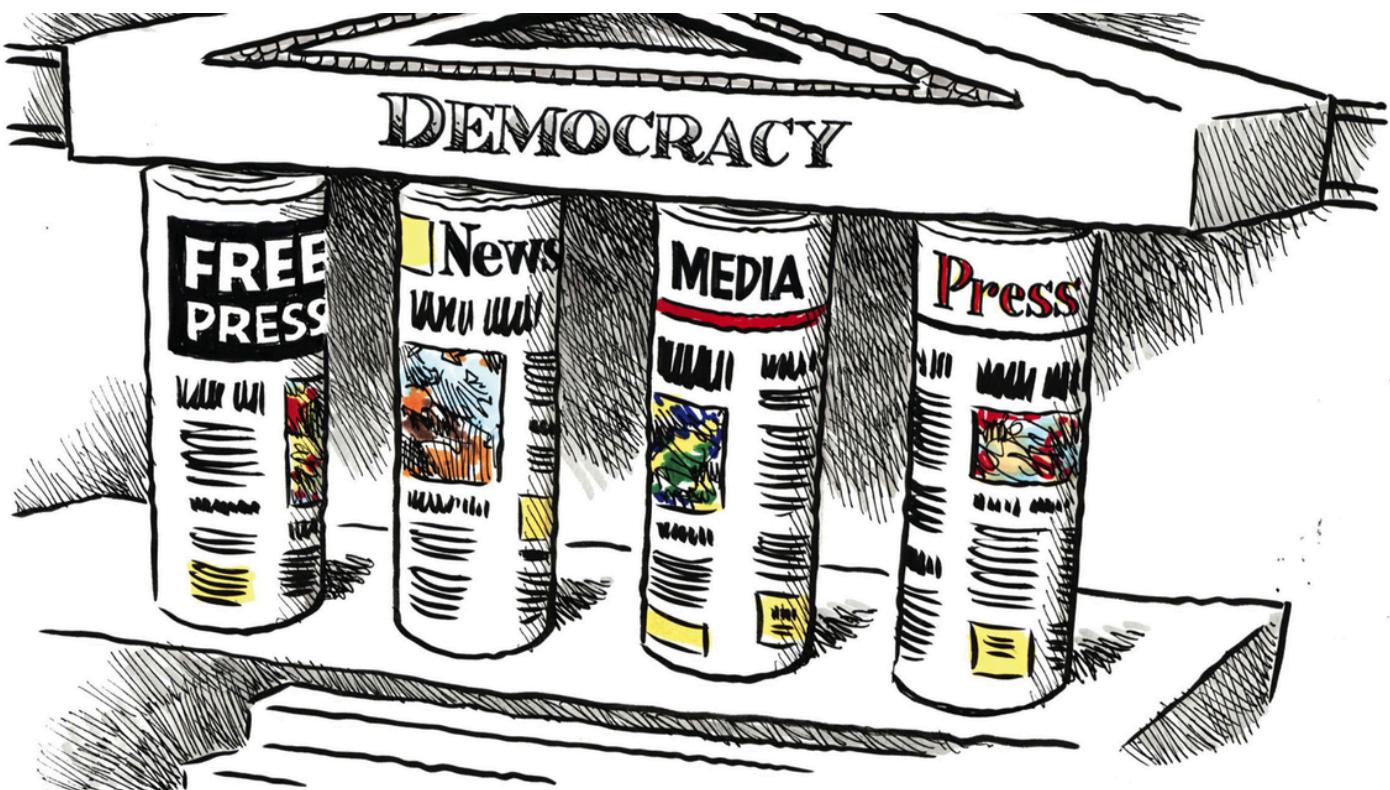
गौरव त्रिखा  
प्रबंध संपादक

प्रसिद्ध पाकिस्तानी-कनाडाई स्तंभकार तारेक फतह का कैंसर से लंबी लड़ाई के बाद 24 अप्रैल को निधन हो गया। वह 73 वर्ष के थे। वह एक पुरस्कार विजेता रिपोर्टर, स्तंभकार और रेडियो और टेलीविजन कमेटीटर थे। "पंजाब का शेर। हिंदुस्तान का बेटा। सच्चाई का वक्ता। दलितों और शोषितों की आवाज। तारेक फतह ने बैटन पास कर दिया है ... उनकी क्रांति सभी के साथ जारी रहेगी!" जो उन्हें जानते और प्यार करते थे। क्या आप हमारे साथ जुड़ेंगे? 1949-2023," उनकी बेटी नताशा फतह, जो खुद एक पत्रकार हैं, ने ट्वीट किया। फतह का जन्म उन माता-पिता से हुआ था जो आजादी के एक महीने बाद बॉम्बे से कराची चले गए थे।

उन्होंने खुद को "पाकिस्तान में पैदा हुए भारतीय, इस्लाम में पैदा हुए पंजाबी; एक मुस्लिम चेतना के साथ कनाडा में एक अप्रवासी, एक मार्क्सवादी बताया था। उन्होंने कराची विश्वविद्यालय में जैव रसायन का अध्ययन किया, कॉलेज में एक जोरदार वामपंथी कार्यकर्ता थे, और पत्रकारिता में गियर बदलने से पहले स्नातक की उपाधि प्राप्त की - एक ऐसा करियर जिसने उन्हें प्रशंसा और मुश्किलों दोनों अर्जित कर के दिए। वह 1970 में एक रिपोर्टर के रूप में कराची सन से जुड़े और बाद में पाकिस्तान के राज्य-प्रसारक पाकिस्तान टेलीविजन के साथ एक खोजी रिपोर्टर बन गए। 1977 में, जिया-उल हक सरकार ने उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया, जिसके बाद वह सऊदी अरब चले गए और अंततः 1987 में कनाडा में बस गए। वहां, वह एक प्रसारक के रूप में टोरंटो रेडियो स्टेशन CFRB न्यूस्टॉक 1010 में शामिल हो गए और कनाडा के मीडिया में कई कार्यकालों के बाद लैंडस्केप, टोरंटो सन के लिए एक स्तंभकार बने। फतेह के पास सोशल मीडिया पर बड़ी संख्या में फॉलोअर्स थे। वे

एक राजनीतिक कार्यकर्ता भी थे। वह मानवाधिकारों के घोर रक्षक और किसी भी रूप में धार्मिक कटूरता के कटूर विरोधी थे। उन्होंने द ज्यू इज नॉट माई एनिमी: अनवेलिंग द मिथ्स दैट प्यूल मुस्लिम एंटी-सेमिटिज एंड चेजिंग ए मिराजः द ट्रेजिक इल्यूजन ऑफ ए इस्लामिक स्टेट नामक पुस्तकें लिखी थीं। फतेह, जो पाकिस्तान के घोर आलोचक थे, कथित तौर पर पाकिस्तानी सेना द्वारा कई बार उन्हें जेल भेजा गया था। वह बलूच अलगाववादी आंदोलन के हिमायती थे और उन्होंने अपने भारतीय मूल होने पर गर्व जताया था। फतेह ने विभाजन पर शोक व्यक्त किया और सरकार पर पाकिस्तानी सेना के प्रभाव पर सवाल उठाया, और इस्लामी चरमपंथ के खिलाफ मुखर थे। उन्होंने 2016 के राष्ट्रपति पद की दौड़ के लिए डोनाल्ड ट्रम्प और बर्नी सैंडर्स दोनों का समर्थन करते हुए, और इस्लामिक आतंकवादियों को शरण देने वाले देशों के लिए आव्रजन प्रतिबंधों की सिफारिश करते हुए, अफगान युद्ध के दौरान सऊदी अरब में आतंकवादी समूहों के अमेरिकी फंडिंग की आलोचना की थी।





चाहे 'द लालनटॉप' हो या 'द वायर', उन्हें कभी भी फंड की चिंता नहीं करनी पड़ती। लोकतंत्र को बचाने के नाम पर उन्हें विभिन्न स्रोतों से पैसा मिलता है। उनसे लड़ने के लिए हमें आपके समर्थन की जरूरत है। स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता करना बहुत मुश्किल है क्योंकि न तो हम किसी से चंदा लेते हैं और न ही कोई पेड न्यूज छापते हैं। इसलिए हम केवल अपने पाठकों पर निर्भर हैं। कृपया अपना योगदान अवश्य दें।



[www.lokstambh.com](http://www.lokstambh.com)



@TLSNews01



@theLokStambh

CONTRIBUTE THROUGH  
GIVEN QR CODE

